

مجموعہ
شاعری

مجموعہ
شاعری

مجھے پینے دے، پینے دے کہ تیرے جامِ لعین میں
اکھی کچھ اور ہے، کچھ اور ہے، کچھ اور ہے ساتی

بجاز کھنوی

کم قیمت میں معیاری اور مقبول ادب پتیا کرنے والے

سٹار سیریز کی پیش کش اپنی طرح کی
واحد کتاب ہے
جس میں
آپ کے پسندیدہ شاعر کا چنیدہ کلام
اردو اور ہندی میں ایک ساتھ
پیش کیا جا رہا ہے
قارئین اس سلسلے کے بارے میں اپنی
رائے سے نوازیں۔

اس خصوصی سلسلے کی دوسری کتابیں

- ظفر کی شاعری
- غالب کی شاعری
- شکیل کی شاعری
- ساحر کی شاعری

(عدہ آفیشطباعت، اردو ہندی میں ایک ساتھ سٹار پاکٹ سیریز)

مجاز

کی

شاعری

(اُردو، ہندی میں یکجا)

مرتب:

امروہوی

DEHLVI AMAR (Comp.)

MAJAZ KI SHAIRI

(POETRY COLLECTION)

STAR, NEW DELHI. 1983

Rs. 5.00

سول ڈسٹری بیوٹرز

سٹار بک سینٹر 1641- دریاہ کلاں، دہلی 110006

ناشر:
سٹار پبلیکیشنز (پرائیوٹ) لمیٹڈ
آصف علی روڈ، نیوی دہلی-110002
ہیلائیڈیشن: 1983ء
قیمت: صرف پانچ روپے -/5
طابع:-

شاعر کے بارے میں

مجاز لکھنوی ۱۹۱۱ء میں اودھ کے مشہور شہر بارہ بنکی کے
قصبہ روولی میں پیدا ہوئے۔ والدین نے اسرار الحق نام رکھا۔ مجاز
مخلص اختیار کیا۔ ابتدا سے ہی ادبی اور تعلیمی ماحول میں پرورش
پانے کی وجہ سے شاعری سے دلچسپی رہی۔ علی گڑھ مسلم یونیورسٹی سے بی اے
پاس کرنے کے بعد کچھ دنوں آل انڈیا ریڈیو دہلی میں اور کچھ دنوں ملکوت
بھئی کے محکمہ اطلاعات میں ملازم رہے۔ بعد ازاں حلقہ ادب لکھنؤ کے
سرگرم رکن اور ”نیا ادب“ کے ادارہ سے منسلک رہنے کے بعد ہارڈنگ
لابرییری دہلی میں ملازم ہو گئے۔ بمبئی کے دوران قیام فلمی دنیا سے بھی
ان کی وابستگی رہی۔ اور انہوں نے کئی فلموں میں گیت بھی لکھے۔
مجاز ایک حساس اور عالی ظرف انسان اور حقیقت نگار شاعر
تھے۔ اسی لئے ملک کی بڑھتی ہوئی متوسط طبقہ کی ابتری، بے روزگاری
کا خوفناک بھوت، گرتے ہوئے سماجی اخلاق، بدلتے ہوئے انسانی معیار
سے بھی وہ بے حد متاثر ہوئے تھے اور اس ہیبت ناک سماج کے خلاف

احتجاج کرتے رہے اور دعوت انقلاب دیتے رہے۔ انہوں نے
بیداری کا پیغام سنایا اور فرسودہ نظام کے خلاف جنگ کرنے کے
لئے آمادہ کیا۔

اپنی شاعری کے ابتدائی دور سے گذر کر مجاز نے محسوس کیا کہ
شاعری کا مقصد خطیبانہ نظمیں لکھنا ہی نہیں ہے بلکہ ایک فنکار کے
لئے ضروری ہے کہ وہ اپنے ارد گرد کے حالات کا مطالعہ کرے اور اسے سمجھنے
کی کوشش کرے۔ مجاز نے ڈرائسنگ روم میں شعر کہنا شروع کیا۔
وہاں سے اٹھ کر پبلک میٹنگ میں نغمہ سرا ہوتے۔ پھر فن کی دنیا
میں داخل ہو کر اپنے جذبات کو اس طرح بیان کرنے لگے کہ ان میں ہمہ گیری
آگئی۔ مجاز کے یہاں جذبات نگاری کوٹ کوٹ کر بھری ہوئی ہے۔
مالیوسی، ناامیدی اور قنوطیت کے عناصر ان کے یہاں بہت کم ہیں۔ جوانی
کی سرمستی اور امتگوں نے ان کے کلام کو ایک خاص دلکشی بخشی ہے۔
مجاز کے کلام کا مجموعہ ۱۹۳۸ء میں آہنگ کے نام سے شائع
ہو کر کافی مقبول ہوا۔ ۱۹۵۵ء میں اس مقبول رومانی شاعر نے
صرف ۲۲ سال کی مختصر سی عمر میں اس دنیا کو خیر باد کہا۔

امروہوی

२०१२

मजलिस

की शायरी

संभल
अमर देहलवा

SH

: 564 :

मुझे पीने दे, पीने दे कि तेरे जाम-ए-सायली में
अभी कुछ और है, कुछ और है, कुछ और है साक़ी

'मजाज़' लखनवी

स्टार सीरीज के इस क्रम में प्रस्तुत कर रहे हैं आप के प्रिय उर्दू शायरों की चुनी हुई शायरी—उर्दू और हिन्दी लिपि में एक साथ !

इस क्रम में अन्य उर्दू कवियों की शायरी के संकलन भी अवश्य पढ़िए !

स्टार सीरीज के इस विशेष क्रम में प्रस्तुत प्रथम पांच पुस्तकें :

- 'शालिब' की शायरी
 - 'ज़फ़र' की शायरी
 - 'शकील' बदायूनी की शायरी
 - 'साहिर' लुधियानवी की शायरी
 - 'मजाज़' की शायरी
- उर्दू और हिन्दी लिपि में एक-साथ
(मूल्य प्रति पुस्तक पांच रुपये)

स्टार पब्लिकेशंज़ (प्रा०) लि० द्वारा प्रकाशित
कम मूल्य की



स्टार पाकेट बुक्स

को और भी कम मूल्य में प्राप्त करने के लिए
हमारी विशेष योजना (बुक क्लब) के सदस्य बनिए !
पत्र लिखकर विवरण निःशुल्क मंगावें ।

प्रकाशक

स्टार पब्लिकेशंज़ (प्रा०) लि०

घासक झली रोड, नयी दिल्ली-110002

‘सजाज़’

की

शायरी

(उर्दू, हिन्दी में एक साथ)

संकलन कर्ता

‘अमर’ देहलवी

Dehlvi, Amar (Comp.) : MAJAZ KI SHAIRI
(Poetry Collection)
Star, New Delhi 1983
Rs. 5.00

प्रथम संस्करण
1983

वितरक :
स्टार पब्लिकेशंस (सेल्फ)
1641, दरीवा कला, दिल्ली-110006

प्रकाशक :
स्टार पब्लिकेशंस (प्रा०) लि०
घासफ्र अली रोड, नयी दिल्ली-110002

□
मूल्य : पांच रुपये मात्र (5.00)

□
मुद्रक :—जुपीटर आफसेट प्रैस
शाहदरा, दिल्ली-११००३२

शायर के बारे में

'मजाज़' लखनवी 1911 ई० में अवध के प्रसिद्ध नगर बाराबंकी के रदौली शहर में पैदा हुए। माता-पिता ने असरार उलहक नाम रखा। 'मजाज़' तखल्लुस अपनाया। शुरू से ही साहित्यिक और शैक्षणिक माहौल में परवरिश पाने के कारण शायरी से दिलचस्पी रही। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से बी० ए० पास करने के बाद कुछ दिनों आल इण्डिया रेडियो देहली में और कुछ दिनों बम्बई सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में कार्य किया। इसके बाद 'हलका-ए-अदब' लखनऊ के कार्यकर्ता और 'नया अदब' संस्था से जुड़े रहने के बाद हार्डिंग लाइब्रेरी देहली में मुलाजिम हो गए। बम्बई में रहते हुए फिल्मी दुनिया से भी जुड़े और कई फिल्मों के गीत भी लिखे।

'मजाज़' एक हस्तास और आली-जफ़् इंसान और हकीकत निगार शायर थे। इसीलिए देश में बढ़ती हुई 'मिडिल क्लास' की अबतरी, बेरोजगारी का खौफ़नाक भूत, गिरते हुए समाजी स्तर और बदलते हुए इन्सानी मेआर से वे बेहद प्रभावित हुए थे और उस हैबतनाक समाज के खिलाफ़ आवाज़ उठाते रहे और दावत-ए-इन्क़लाब देते रहे उन्होंने बेदारी का पैग़ाम सुनाया और फरसूदा निज़ाम के खिलाफ़ जंग करने के लिए तैयार किया।

अपनी शायरी के प्रारम्भिक दौर से गुज़रकर 'मजाज़' ने महसूस किया कि शायरी का मक़सद उपदेश वाली नवमे लिखना ही नहीं, वरन् एक फन्कार के लिए ज़रूरी है कि वह अपने आस-पास के हालात का जायज़ा ले और उसे समझने की कोशिश करे, 'मजाज़' ने

ड्राइंग-रूम में शेर कहना शुरू किया, वहां से उठकर पब्लिक मीटिंग में नगमा सरा हुए, फिर फ़न की दुनिया में दाखिल होकर अपने जज़्बात को इस प्रकार ब्यान करने लगे कि उनमें हमागीरी आ गई। 'मजाज़' के यहां जज़्बात निगारी कूट-कूटकर भरी हुई है। मायूसी नाउम्मीदी और क़नूतियत के लक्षण बहुत कम है, जवानी की सर-मस्ती और उमंगों ने उनके कलाम को एक खास दिलकशी बरूशी है।

'मजाज़' के कलाम का मजमुआ 1938 ई० में 'आहंग' के नाम से प्रकाशित होकर काफ़ी प्रसिद्ध हुआ। 1955 ई० में उर्दू के इस प्रसिद्ध रूमानी शायर ने केवल 44 वर्ष की मुस्तसिर आयु में इस संसार को अलविदा कहा।

'अमर' देहलवी

उर्दू के लोकप्रिय शायरों

की चुनी हुई शायरी अब

उर्दू और हिन्दी लिपि में एक साथ !

स्टार पॉकेट सीरीज के अन्तर्गत एक नया क्रम शुरू किया जा रहा है—जिसमें आपके प्रिय उर्दू शायरों की रचनाओं का संकलन।

उर्दू—हिन्दी दोनों भाषाओं में आमने-सामने प्रस्तुत किया जा रहा है।

इस क्रम की पहली पाँच पुस्तकें इसी मास प्रस्तुत की जा रही हैं।

यदि पाठकों को यह पुस्तकें पसन्द आईं तो हमारा प्रयास होगा।

कि उर्दू के सभी लोकप्रिय शायरों की शायरी इस क्रम में प्रस्तुत का जाए

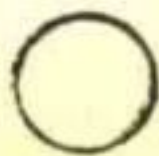
अतः पाठकों से निवेदन है कि इन पुस्तकों के बारे में अपने विचार हमें अवश्य लिखें।

—प्रकाशक

چھلکے تیری آنکھوں سے شراب اور زیادہ
 مہلکیں تیرے عارض کے گلاب اور زیادہ
 اللہ کرے زور شباب اور زیادہ

سچ تو یہ ہے مجاز کی دنیا
 حسن اور عشق کے سوا کیا ہے

تم بھی مجاز انسان ہو آخر لاکھ چھپاؤ عشق اپنا
 یچید مگر کھل جائے گا، یہ لازم مگر افشا ہو گا



छलके तेरी आँखों से शराब और ज्यादा
 महकें तेरे आरिज के गुलाब और ज्यादा
 अल्लाह करे जोर-ए-शबाब और ज्यादा



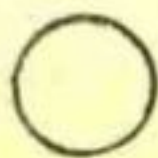
सब तो यह है 'मजाज' की बुनिया
 हुस्न और इश्क के सिवा क्या है



तुम भी 'मजाज' इंसां हो आखिर, लाख छुपाओ इश्क अपना
 यह भेद मगर खुल जायेगा, यह राज मगर अफ़शा होगा

تعارف

خوب سہجان لو اسرار ہوں میں
 جنس الفت کا طلبگار ہوں میں
 عشق ہی عشق سے دنیا میری
 فتنہ عقل سے بیزار ہوں میں
 چھیرتی ہے جسے مضراب الم
 سازِ فطرت کا وہی تار ہوں میں
 عیب جو حافظ و ختم میں تھا
 ہاں کچھ اس کا بھی گنہگار ہوں میں
 زندگی کیا ہے گناہِ آدم
 زندگی سے تو گنہگار ہوں میں
 میری باتوں میں مسیحائی ہے
 لوگ کہتے ہیں کہ بیمار ہوں میں
 اک لپکتا ہوا شعلہ ہوں میں
 اک چلتی ہوئی تلوار ہوں میں



तथारुफ़

खूब पहचान लो 'असरार' हूँ मैं
जिन्स-ए-उलफ़त¹ का तलबगार² हूँ मैं

इश्क़ ही इश्क़ है दुनिया मेरी
फितना-ए-अक्ल से बेज़ार³ हूँ मैं

छेड़ती है जिसे मिज़राब-ए-अलम⁴
साज़-ए-फ़ितरत⁵ का वही तार हूँ मैं

ऐब⁶ जो हाफ़िज़-ओ-ख़य्याम में था
हाँ कुछ इसका भी गुनहगार हूँ मैं

ज़िन्दगी क्या है गुनाह-ए-आदम
ज़िन्दगी है तो गुनहगार हूँ मैं

मेरी बातों में 'मसीहाई'⁷ है है
लोग कहते हैं कि बीमार हूँ मैं

एक लपकता हुआ शोला हूँ मैं
एक चलती हुई तलवार हूँ मैं

1935



-
1. मुहब्बत 2. चाहनेवाला 3. नफ़रत करना 4. राम की चोट
5. क्रुदरत 6. बुराई 7. बीमार को शिफ़ा देने वाला ।

عزل

حسن پھر فتنہ گرے کیا کہئے
 دل کی جانب نظر نے کیا کہئے
 سچھرو ہی رہ گذر رہے کیا کہئے
 زندگی راہ پر رہے کیا کہئے
 حسن خود پردہ درے کیا کہئے
 یہ ہماری نظر سے کیا کہئے
 آہ تو بے اثر تھی برسوں سے
 نغمہ بھی بے اثر ہے کیا کہئے
 حسن سے اب نہ حسن کے جلوے
 اب نظر ہی نظر ہے کیا کہئے
 آج بھی مجاز خاک تشیں
 اور نظر عرش پر ہے کیا کہئے



गजल

हुस्न फिर फ़ितनागर¹ है क्या कहिये
दिल की जानिब² नज़र है क्या कहिये

फिर वही रहगुज़र³ है क्या कहिये
ज़िन्दगी राहबर⁴ है क्या कहिये

हुस्न खुद पर्दादर⁵ है क्या कहिये
यह हमारी नज़र है क्या कहिये

आह तो बे-असर थी बरसों से
नग़मा भी बे-असर है क्या कहिये

हुस्न है अब न हुस्न के जलवे
अब नज़र ही नज़र है क्या कहिये

आज भी है 'मजाज़' खाक-नशी⁶
और नज़र अर्श⁷ पर है क्या कहिये

1936



1. फ़ितने पैदा करने वाला 2. तरफ 3. ग्राम रास्ता 4. रास्ता
दिखाने वाला 5. पर्दा करने वाला 6. ज़मीन पर रहने वाला ।
7. आसमान ।

غزل

حسن کو بے حجاب ہونا تھا
 شوق کو کامیاب ہونا تھا
 ہجر میں کیفِ اضطراب نہ پوچھ
 خونِ دل بھی شراب ہونا تھا
 تیرے جلووں میں گھر گیا آخر
 ذرے کو آفتاب ہونا تھا
 کچھ تمہاری نگاہ کا فرسٹی
 کچھ مجھے بھی خراب ہونا تھا
 رات تاروں کا لوطنا بھی مجاز
 باعثِ اضطراب ہونا تھا

۱۹۳۰ء



राजल

हुस्न को बे-हिजाब¹ होना था
शौक को कामयाब होना था

हिज्ज² में कैफ़-ए-इज्जतराब³ न पूछ
खून-ए-दिल भी शराब होना था

तेरे जलवों में घिर गया आखिर
जर्न को आफ़ताब होना था

कुछ तुम्हारी निगाह काफ़िर थी
कुछ मुझे भी खराब होना था

रात तारों का टूटना भी 'मजाज'
बाइस-ए-इज्जतराब⁴ होना था

1930



1. बेपर्दा 2. जुदाई 3. बेचैनी की हालत 4. बेचैनी का कारण ।

نمایش

وہ کچھ دوشیزگانِ ناز پرور
 کھڑی ہیں اک بساطی کی دکان پر
 نظر کے سامنے ہے ایک محشر
 اور اک محشر ہے میرے دل کے اندر
 وہ رخساروں پہ ہلکی ہلکی سُرخ
 لبوں میں پرفتاں روحِ گلِ تر
 وہ خوشبو آرہی ہے پرہن سے
 قضا سے دور تک جس سے معطر
 نشاطِ رنگ و بو سے چور آکھیں
 شرابِ ناب سے لبریز ساغر
 خرامِ ناز سے نغمے جگاتی
 وہ چل دیں ایک جانب مسکرا کر
 کسی کی حسرتیں پامال کرتی
 کسی کی حسرتیں ہمراہ لے کر
 ادھر ہم نے اک آہِ سرد کھینچی
 بنسی پھر آگئی اپنے کئے پر



नुमाएश

वह कुछ दोशीजगान-ए-नाज परवर¹
 खड़ी हैं एक बिसाती की दुकां पर
 नजर के सामने है एक महशर
 और एक महशर है मेरे दिल के अन्दर
 वह रुखसारों पे हल्की-हल्की सुर्खी
 लबों पर पुरफिशाँ² रूह-ए-गुले तर
 वह खुशबू आ रही है पैरहन से
 फ़िजाँ है दूर तक जिस से मुअत्तर³
 निशात⁴-ए-रंग बू से चूर आँखें
 शराब-ए- नाब से लबरेज सागर
 खराम⁵-ए-नाज से नगमें जगाती
 वह चल दीं एक जानिब मूस्कुराकर
 किसी की हसरतें पामाल⁶ करती
 किसी की हसरतें हमराह लेकर
 इधर हमने एक आह-ए-सर्द खेंची
 हँसी फिर आ गई अपने किये पर



1931

1. जवान लड़कियाँ नाज-ओ-अदा के साथ 2. गुलाब के फूल जैसी सुर्खी 3. खुशबूदार 4. खुशी 5. बड़ी अदा की चाल 6. मिटाना ।

غزل

کیا عشق ہے دیوانہ ہو گیا ہوں میں
 یہ کس کے ہاتھ سے دامن چھڑا رہا ہوں میں
 تمہیں تو ہو جسے کہتی ہے ناخدا دنیا
 بچا سکو تو بچا لو، کہ ڈوبتا ہوں میں
 یہ میرے عشق کی مجبوریاں معاذ اللہ
 تمہارا راز تمہیں سے چھپا رہا ہوں میں
 اس اک حجاب پہ سولے حجابیاں صدقے
 جہاں سے چاہتا ہوں تم کو دیکھتا ہوں میں
 بتانے والے وہیں پر بتاتے ہیں منزل
 ہزار بار جہاں سے گزر چکا ہوں میں
 کبھی یہ زعم کہ تو مجھ سے چھپ نہیں سکتا
 کبھی یہ وہم کہ خود بھی چھپا ہوا ہوں میں
 مجھے سننے نہ کوئی مسرت بادۂ عشرت
 مجاز ٹوٹے ہوئے دل کی اک نصیب ہوں میں



राजल

कमाल-ए-इश्क¹ है दीवाना हो गया हूँ मैं
 यह किसके हाथ से दामन छुड़ा रहा हूँ मैं
 तुम्हीं तो हो जिसे कहती है नाखुदा² दुनिया
 बचा सको तो बचा लो, कि डूबता हूँ मैं
 यह मेरे इश्क की मजबूरियाँ मन्नाज़-अल्लाह³
 तुम्हारा राज तुम्हीं से छुपा रहा हूँ मैं
 इस इक हिजाब⁴ पे सौ बे-हिजाबियाँ सदर्के
 जहाँ से चाहता हूँ तुमको, देखता हूँ मैं
 बताने वाले वहीं पर बताते हैं मंज़िल
 हजार बार जहाँ से गुज़र चुका हूँ मैं
 कभी यह ज़ोम कि तू मुझसे छुप नहीं सकता
 कभी यह वहम कि खुद भी छुपा हुआ हूँ मैं
 मुझे सुने न कोई मस्त-ए-बादा-ए-इशरत⁵
 'मजाज़' टूटे हुए दिल की इक सदा हूँ मैं

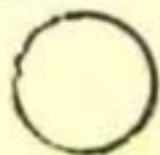
1931



1. इश्क के कमाल तक पहुँचना 2. कष्टी खेने वाला 3. अल्लाह की पनाह 4. पर्दा 5. इशरत की शराब में मस्त ।

غزل

سارا عالم گوشش بر آواز ہے
 آج کن ہا کھوں میں دل کا ساز ہے
 تو جہاں ہے زمزمہ پر واز ہے
 دل جہاں ہے گوشش بر آواز ہے
 ہاں ذرا جرأت دکھا اے جذبِ دل
 حسن کو پردے پہ اپنے ناز ہے
 ہم نشیں دل کی حقیقت کیا کہوں
 سوز میں ڈوبا ہوا اک ساز ہے
 آپ کی محمور آنکھوں کی قسم
 میری مے خواری ابھی تک راز ہے
 ہنس دیے وہ میرے رونے پر مگر
 ان کے ہنس دینے میں بھی اک راز ہے
 حسن کو ناحق پشیمان کر دیا
 اے جنوں یہ بھی کوئی انداز ہے
 ساری محفل جس پہ جھوم اکھی مجاز
 وہ تو آوازِ شکست ساز ہے



राजस

सारा आलम गोश-बर-आवाज¹ है
आज किन हाथों में दिल का साज² है

तू जहाँ है जमजमा परवाज है
दिल जहाँ है गोश-बर-आवाज है

हाँ जरा जुरअत दिखा ऐ जज्बे-दिल
हुस्न को पर्दे पे अपने नाज है

हम नशीं दिल की हकीकत क्या कहूँ
सोज में डूबा हुआ एक साज है

आपकी मखमूर³ आँखों की कतम
मेरी मयख्वारी अभी तक राज है

हँस दिये वह मेरे रोने पर मगर
उनके हँस देने में भी एक राज है

हुस्न को नाहक पशेमा⁴ कर दिया
ऐ जुनूँ यह भी कोई अन्दाज है

सारी महफ़िल जिस पे भूम उट्टी 'मजाज'
वह तो आवाज-ए-शिकस्त-ए-साज है

□

1931

1. आवाज की ओर कान लगाए हुए है 2. गीत 3. नशे में भरा हुआ 4. शर्मिन्दा ।

غزل

نگاہِ لطف مت اٹھا خوگرِ آلام رہنے دے
 ہمیں ناکام رہنا ہے ہمیں ناکام رہنے دے
 کسی معصوم پر بیداد کا الزام کیا معنی
 یہ وحشت خیز باتیں عشقِ بد انجام رہنے دے
 ابھی رہنے دے دل میں شوقِ شوریدہ کے ہنگامے
 ابھی سر میں محبت کا جنونِ خام رہنے دے
 ابھی رہنے دے کچھ دن لطفِ نغمہ مستی صہبیا
 ابھی یہ ساز رہنے دے ابھی یہ جام رہنے دے
 کہاں تک حُسنِ بھٹی آخر کرے پاسِ رواداری
 اگر یہ عشقِ خود ہی فرقِ خاص و عام رہنے دے
 بہ اس زندگی بجازاکِ شاعرِ مزدور و دستمال ہے
 اگر شہرہ دل میں وہ بدنام ہے بدنام رہنے دے

۱۹۲۲ء



राजल

निगाह-ए-लुत्फ मत उठा खूगर-ए-आलाम¹ रहने दे
हमें नाकाम रहना है, हमें नाकाम रहने दे

किसी मासूम पर बेदाद² का इलजाम क्या मानी
यह वहशत खेज बातें इश्क-ए-बद अन्जाम रहने दे

अभी रहने दे दिल में शौक-ए-शोरीदा के हंगामें
अभी सर में मुहब्बत का जुनून-ए-खाम³ रहने दे

अभी रहने दे कुछ दिन लुत्फ-ए-नगमा मस्ती-ए-सहबा
अभी यह साज रहने दे, अभी यह जाम रहने दे

कहाँ तक हुस्न भी आखिर करे पास-ए-रवादारी⁴
अगर यह इश्क खुद ही फर्क खास-ओ-आम रहने दे

बई रिन्दी 'मजाज' एक शायर-ए-मजदूर-ओ-दहका⁵ है
अगर शाहरों में वह बदनाम है बदनाम रहने दे

1932



1. मुसीबत के आदी 2. जुल्म 3. बेकार का पागलपन 4. लेहाज
5. देहाती मजदूर ।

غزل

رہِ شوق سے اب ہٹا چاہتا ہوں
 کششِ حُسن کی دیکھنا چاہتا ہوں
 کوئی دل سا درد آشنا چاہتا ہوں
 یہ عشق میں رہنا چاہتا ہوں
 تجھی سے تجھے چھیننا چاہتا ہوں
 یہ کیا چاہتا ہوں یہ کیا چاہتا ہوں
 خطاؤں پہ جو مجھ کو مائل کرے پھر
 سزا اور ایسی سزا چاہتا ہوں
 وہ مخمور نظریں، وہ مدہوش آنکھیں
 خراب محبت ہو چاہتا ہوں
 وہ آنکھیں جھلکیں وہ کوئی مُسکرایا
 پیامِ محبت سنا چاہتا ہوں
 تجھے دُکھو نہ دتا ہوں تری جستجو ہے
 مزا ہے کہ خود گم ہوا چاہتا ہوں
 کہاں کا کرم اور کیسی عنایت
 مجازاً اب جفا ہی جفا چاہتا ہوں

राजल

रह-ए-शौक¹ से अब हटा चाहता हूँ
 कशिश हुस्न की देखना चाहता हूँ
 कोई दिल-सा दर्द आशना चाहता हूँ
 रह-ए-इश्क में रहनुमा² चाहता हूँ
 तुम्ही से तुम्हे छीनना चाहता हूँ
 यह क्या चाहता हूँ यह क्या चाहता हूँ
 खताओं पह जो मुझको माइल करे फिर
 सजा और ऐसी सजा चाहता हूँ
 वह मखमूर नजरें वह मदहोश आँखें
 खराब-ए-मुहब्बत³ हुआ चाहता हूँ
 वह आँखें भुकीं वह कोई मुस्कुराया
 प्याम-ए-मुहब्बत सुना चाहता हूँ
 तुम्हे ढूँढ़ता हूँ तेरी जुस्तुजू है
 मजा है कि खुद गुम हुआ चाहता हूँ
 कहाँ का करम और कैसी इनायत
 'मजाज' अब जफ़ा ही जफ़ा⁴ चाहता हूँ

1932



1. शौक का रास्ता 2. रास्ता दिखाने वाला 3. मुहब्बत में खराब होना 4. बेवफ़ाई ।

غزل

خامشی کا تو نام ہوتا ہے
 ورنہ یوں بھی کلام ہوتا ہے
 عشق کو پوچھتا نہیں کوئی
 حسن کا احترام ہوتا ہے
 آنکھ سے آنکھ جب نہیں ملتی
 دل سے دل ہم کلام ہوتا ہے
 حسن کو شرمسار کرنا ہی
 عشق کا انتقام ہوتا ہے
 الشدائد یہ تازِ حسن مجاز
 انتظارِ سلام ہوتا ہے
 ۱۹۲۲ء



शब्दल

खामशी का तो नाम-होता है
वरना यूं भी कलाम¹ होता है

इश्क को पूछता नहीं कोई
हुस्न का एहताराम² होता है

आँख से आँख जब नहीं मिलती
दिल से दिल हमकलाम³ होता है

हुस्न को शर्मसार⁴ करना ही
इश्क का इन्तेकाम⁵ होता है

अल्ला-अल्ला यह नाज़-ए-हुस्न-ए-'मजाज़'
इन्तज़ार-ए-सलाम होता है

1932



1. बातचीत 2. इज्जत 3. बात करना 4. शर्मिन्दा करना
5. बदला लेना ।

نغمہ ٹیکور

(ترجمہ از کارڈنر)

میں نے ہنگام صبح، اُسے دنیا
 تیرے گلشن سے ایک گل توڑا
 اپنے سینے پہ دی جگہ اس کو
 چبھ گیا دل میں لیکن اک کانٹا
 شام ہوتے ہی میں نے یہ دیکھا
 گل تھا پتھر مردہ درد باقی تھا
 حسن و خوشبو میں اک سے اک بڑھکر
 اور بھی ہوں گے تجھ میں گل پیدا
 میری گل چینیوں کا وقت مگر
 ایک مدت ہوئی کہ ختم ہوا
 اور اب جب کہ رات طاری ہے
 گل نہیں پائس درد باقی ہے

۱۹۳۲ء



नरामा-ए-टंगोर

(तर्जुमा अज गार्डनर)

मैंने हंगाम-ए-सुब्हा¹, ऐ-दुनिया
 तेरे गुलशन से एक गुल तोड़ा
 अपने सीने पे दी जगह उसको
 चुभ गया दिल में लेकिन एक काँटा
 शाम होते ही मैंने यह देखा
 गुल था पजमुर्दा² दर्द बाक़ी था
 हुस्त-ओ-ख़शबू में इक से इक बढ़कर
 और भी होंगे तुझमें गुल पैदा
 मेरी गुलचीनियों³ का वक्त मगर
 एक मुद्दत हुई कि खत्म हुआ
 और अब जबकि रात तारी⁴ है
 गुल नहीं पास दर्द बाक़ी है

1932



1. सुबह की घमा घमी 2. टूटा हुआ दिल 3. खुशआहग बातें
 4. फैली हुई ।

غزل

یہ میری دنیا یہ میری ہستی نغمہ طرازی، صہبیا پرستی
 شاعر کی دنیا شاعر کی ہستی یا نالہ غم، یا شورِ مستی
 سب سے گریزاں سب پر برستی آنکھوں کی مستی، ہنسی نہ سستی
 یا خلد و ساقی اے جذبِ مستی یا ٹکڑے ٹکڑے دامنِ ہستی
 مجھ سفر ہوں، گرم سفر ہوں میری نظر میں رفعت نہ پستی
 ان آنکھوں کیوں کا عالم نہ پوچھو صہبیا ہی صہبیا، مستی ہی مستی
 وہ آ بھی جاتے، وہ ہو بھی جاتے چشمِ تمنا پھر بھی ترستی
 اُن کا کرم سے اُن کی محبت
 کیا میرے نغمے کیا میری ہستی

۱۹۳۲ء



शब्दल

यह मेरी दुनिया यह मेरी हस्ती¹
नगमा तराजी सहबा परसती

शायर की दुनिया, शायर की हस्ती
था नाला-ए-गम² या शोर-ए-मस्ती

सबसे गुरेजाँ, सब पर बरसती
आँखों की मस्ती महगी न सस्ती

या खुल्द-ओ-साकी, ऐ जब-ए-मस्ती
या टुकड़े-टुकड़े दामान-ए-हस्ती

महव-ए-सफर हूँ, गर्म-ए-सफर हूँ
मेरी नजर में रफ़अत³ न पस्ती

इन आँखड़ियों का आलम न पूछो
सहबा ही सहबा, मस्ती ही मस्ती

वह आ भी जाते, वह हो भी जाते
चश्म--ए-तमन्ना⁴ फिर भी तरसती

उनका करम है उनकी मुहब्बत
क्या मेरे नगमें, क्या मेरी हस्ती

□

1932

1. जिन्दगी 2. गीत 3. बुलन्दी 4. तमन्ना और आरजू की आँखों में झलक ।

غزل

سینے میں ان کے جلوے چھپائے ہوئے تو ہیں
 ہم اپنے دل کو طور بنائے ہوئے تو ہیں
 تاثیر جذبِ شوق دکھائے ہوئے تو ہیں
 ہم تیرا ہر حجاب اٹھائے ہوئے تو ہیں
 ہاں کیا ہوا وہ حوصلہ دید اہلِ دل
 دیکھو نا وہ نقاب اٹھائے ہوئے تو ہیں
 تیرے گناہ گار، گنہ گار ہی سہی
 تیرے کرم کی آس لگائے ہوئے تو ہیں
 یوں تجھ کو اختیار ہے تاثیر دے نہ دے
 دستِ دعا ہم آج اٹھائے ہوئے تو ہیں
 ذکر ان کا گزرِ باں یہ نہیں ہے تو کیا ہوا
 اب تک نفسِ نفس میں سمائے ہوئے تو ہیں
 ملتے ہوؤں کو دیکھ کے کیوں رونہ دیں مجھ آز
 آخر کسی کے ہم بھی مٹائے ہوئے تو ہیں



सीने में उनके जलवे छुपाये हुए तो हैं
 हम अपने दिल को-तूर¹ बनाए हुए तो हैं
 तासीर जब-ए-शौक दिखाये हुए तो हैं
 हम तेरा हर हिजाब² उठाये हुये तो हैं
 हाँ क्या हुआ वह हीसला-ए-दीद³ अहल-ए-दिल
 देखो ना वह नकाब उठाये हुए तो हैं
 तेरे गुनहगार—गुनहगार ही सही
 तेरे करम की आस लगाये हुए तो हैं
 यूँ तुम्हको इखत्यार है तासीर दे न दे
 दसत-ए-दुआ⁴ हम आज उठाये हुए तो हैं
 जिक्र उनका गर जबाँ पे नहीं है तो क्या हुआ
 अब तक नफ़स-नफ़स में समाये हुए तो हैं
 मिटते हुआँ को देख के क्यूँ रो न दे 'मजाज़'
 आखिर किसी के हम भी मिटाये हुए तो हैं

1932



1. पहाड़ का नाम 2. पर्दा 3. देखने का शौक 4. दुआ के लिये हाथ उठाना ।

غزل

عیش سے بے نیاز ہیں ہم لوگ
 بے خودِ سوز و ساز ہیں ہم لوگ
 جس طرح چاہے چھٹروے ہم کو
 تیرے ہاتھوں میں ساز ہیں ہم لوگ
 لے سبب التفات کیا معنی
 کچھ تو اے چشمِ ناز ہیں ہم لوگ
 محفلِ سوز و ساز ہے دنیا
 حاصلِ سوز و ساز ہیں ہم لوگ
 کوئی اس راز سے نہیں واقف
 کیوں سراپا نیاز ہیں ہم لوگ
 ہم کو رسوا نہ کر زما نے میں
 بسکہ تیرا ہی راز ہیں ہم لوگ
 سب اسی عشق کے کرستے ہیں
 ورنہ کیا اے مجاز ہیں ہم لوگ

۱۹۳۳ء



गजल

ऐश से बे-नियाज हैं हम लोग
बे-खुद-ए-सोज-ओ-साज हैं हम लोग

जिस तरह चाहे छोड़ दे हमको
तेरे हाथों में साज हैं हम लोग

बे-सबब इलतेफात¹ क्या मानी
कुछ तो ऐ चश्म-ए-नाज हैं हम लोग

महफ़िल-ए-सोज-ओ-साज है दुनिया
हीसिल-ए-सोज-ओ-साज हैं हम लोग

कोई इस राज से नहीं वाक़िफ़
क्यूँ सरापा-न्याज² हैं हम लोग

हमको रुसवा³ न कर जमाने में
बस कि तेरा ही राज हैं हम लोग

सब इसी इश्क़ के करिश्मे हैं
वरना क्या ऐ 'मजाज' हैं, हम लोग

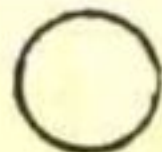
1933



1. मुहब्बत होना और ख्याल करना 2. सर से पैर तक मुहब्बत में डबे हुए 3. शर्मिन्दा ।

نظم

دیکھتا جذبِ محبت کا اثر آج کی رات
 میرے شانے پہ ہے اُس شوخ کا لہجہ رات
 اور کیا چاہیے اب اے دل مجروح تجھے!
 اُس نے دیکھا تو یہ اندازِ دیگر آج کی رات
 پھول کیا خار بھی ہیں آج گلستاں بکنار
 سنگِ بیزے ہیں لگا ہوں میں گہ آج کی رات
 نور ہی تو ہے کس سمت اٹھاؤ آنکھیں
 حسن ہی سن ہے تاحدِ نظر آج کی رات
 نرگسِ ناز میں وہ نیند کا بلکا سا خمار
 وہ مرے نغمہ شیریں کا اثر آج کی رات
 نغمہ و مے کا یہ طوفانِ طرب کیا کہیے!
 گھر مرا بن گیا خیم کا گھر آج کی رات
 اُن کے الطاف کا اتنا ہی فسوں کافی ہے
 کم ہے پہلے سے بہت در و جگر آج کی رات



नज़्म

देखना जज़्बे मुहब्बत का असर आज की रात
मेरे शाने पे है उस शोख का सर आज की रात
और क्या चाहिये अब ऐ दिले मजरूह¹ तुम्हे !
उसने देखा तो बअन्दाज़-ए-दिगर² आज की रात
फूल क्या खार भी हैं आज गुलिसर्ता बकिनार
संगरेजे हैं निगाहों में गुहर³ आज की रात
नूर ही नूर है किस सम्त³ उठाऊँ आंखें
हुस्न ही हुस्न है ता हद-ए-नज़र आज की रात
नरगिस-ए-नाज़ में वह नीन्द का हल्का-सा खुमार
वह मेरे नगमा-ए-शीरीं का असर आज की रात
नगमा-ओ-मय का यह तूफ़ान-ए-तरब क्या कहिये !
घर मेरा बन गया खय्याम का घर आज की रात
उनके अलताफ़ का इतना ही फ़ुसूँ⁴ काफ़ी है
कम है पहले से बहुत दर्द-ए-जिगर आज की रात !

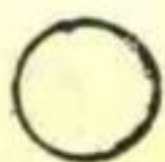
1933



1. जखमी 2. दूसरे तरीके से 3. मोती 4. जादू ।

غزل

خود دل میں رہ کے آنکھ سے پردا کرے کوئی
 ہاں لطف جب ہے پا کے بھی ڈھونڈ کرے کوئی
 تم نے تو حکم ترک تمنا سنا دیا
 کس دل سے آہ ترک تمنا کرے کوئی
 دنیا لرز گئی دل حراماں نصیب کی!
 اس طرح سازِ عیش نہ چھڑا کرے کوئی
 مجھ کو یہ آرزو وہ اٹھائیں نقاب خود
 ان کو یہ انتظار تقاضا کرے کوئی
 رنگینی نقاب میں گم ہو گئی نظر
 کیا لے حجابیوں کا تقاضا کرے کوئی
 یا تو کسی کو جرأت دیدار ہی نہ ہو
 یا پھر مری نگاہ سے دیکھا کرے کوئی
 ہوتی ہے اس میں حسن کی توہین اے مجاز
 اتنا نہ اہل عشق کو رسوا کرے کوئی



गजल

खुद दिल में रह के आँख से पर्दा करे कोई
हां लुत्फ़ जब है पाके भी ढूँढ़ा करे कोई

तुमने तो हुक्म-ए-तर्क-ए-तमन्ना सुना दिया
किस दिल से आह तर्क-ए-तमन्ना करे कोई

दुनिया लरज गई दिल-ए-हिरमाँ-नसीब¹ की
इस तरह साज-ए-ऐश न छोड़ा करे कोई

मुझको यह आरज वह उठायें नक्राव खुद
उनको यह इन्तेज़ार तक्राजा करे कोई

रंगीनी-ए-नक्राव में गुम हो गई नजर
क्या बे-हिजाबियों² का तक्राजा करे कोई

या तो किसी को जुरअत-ए-दीदार ही न हो
या फिर मेरी निगाह से देखा करे कोई

होती है इसमें हुस्न की तौहीन ऐ 'मजाज'
इतना न अहल-ए-इश्क को रुसवा³ करे कोई।

1933



1. किस्मत के मारे हुए 2. बेपर्दिगी 3. बदनाम।

شوقِ گریزاں

دیر و کعبہ کا میں نہیں قائل
 دیر و کعبہ کو آستان نہ بنا
 مجھ میں تو روحِ سرمدی مت پھونک
 رولقِ بزمِ عارفان نہ بنا
 میری خود داریوں کا خون نہ کر
 مطربِ بزمِ دلبراں نہ بنا
 ماہِ وانجم سے مجھ کو کیا نسبت
 مجھ کو ان کا مزاجداں نہ بنا
 جس کو اپنی خبر نہیں رہتی
 اس کو سالارِ کارواں نہ بنا
 اس زمیں کو زمیں ہی رہنے دے
 اس زمیں کو تو آسماں نہ بنا
 رازِ تیرا چھپا نہیں سکتا
 تو مجھے اپنا رازداں نہ بنا

शौक-ए-गुरेजा

दर-ओ-काबा का मैं नहीं कायल
दर-ओ-काबा को आसताँ न बना

मुझमें तू रह-ए-सरमदी मत फूँक
रौनक-ए-बज्म¹-ए-अरिफाँ² न बना

मेरी खुहारियों का खून न कर
मतरब-ए-बज्म-ए-दिलबराँ न बना

माह-ओ-अन्जुमसे मुझको क्या निसबत
मुझको इनका मिजाजदाँ न बना

जिसको अपनी खबर नहीं रहती
उसको सालार-ए-कारवाँ न बना

इस जमीं को जमीं ही रहने दे
इस जमीं को तू आसमाँ न बना

राज तेरा छुपा नहीं सकता
तू मुझे अपना राजदाँ न बना ।

1934



1. महकिल 2. अल्सावाले 3. गीतों की महकिल ।

غزل

کچھ سمجھ کو خبر ہے ہم کیا کیا، اے شورشِ دواراں بھول گئے
 وہ زلفِ پریشیاں بھول گئے، وہ دیدہ گریاں بھول گئے
 اے شوقِ نظارہ کیا کہئے، نظروں میں کوئی صورت ہی نہیں
 اے ذوقِ تصور کیا کہئے، ہم صورتِ جاناں بھول گئے
 پگل سے نظر ملتی ہی نہیں ابل کی گلی کھلتی ہی نہیں
 اکھنل بہاراں رخصت ہو، ہم لطفِ بہاراں بھول گئے
 سب کا تو منداوا کر ڈالا، اپنا ہی منداوا کر نہ سکے
 کے تو گریباں سی ڈالے، اپنا ہی گریباں بھول گئے
 یہ اپنی وفا کا عالم ہے، اب ان کی حفا کو کیا کہئے
 اک شتر نہ ہر آگیں رکھ کر نیر دیکر گناں بھول گئے

۱۹۳۴ء



गजल

कुछ तुम्हको खबर है हम क्या-क्या ऐ शोरिश-ए-दौरा¹
भूल गए

वह जुलफ़-ए-परीशां भूल गये, वह दीदा-ए-गिरयां² भूल गए

ऐ शौक-ए-नज़ारा क्या कहिये, नज़रों में कोई सूरत ही नहीं
ऐ जौकें-ए-तसव्वर क्या कीजिये, हम सूरत-ए-जानां³ भूल गए

अब गुल से नज़र मिलती ही नहीं, अब दिल की कली
खिलती ही नहीं

ऐ फ़सल-ए-बहारां रुखसत हो, हम लुत्फ़-ए-बहारां भूल गए

सब-का तो मदावा⁴ कर डाला अपना ही मदावा कर न सके
सब के तो गरीबां सी डाले, अपना ही गरीबां भूल गए

यह अपनी वफ़ा का आलम है, अब उनकी जफ़ा को
क्या कहिये

एक नशतर ज़हर-आगीं⁵ रखकर, नजदीक-ए-रग-ए-जां
भूल गये

1934



1. जमाने की बेचनी और तक्राबा 2. रone वाली आंखें 3. महबूब की सूरत 4. इलाज 5. ज़हर से भरा हुआ ।

جشنِ سالگرہ

اک مجمعِ رنگیں میں وہ گھبرائی ہوئی سی
 بیٹھی ہے عجب ناز سے شرمائی ہوئی سی
 آنکھوں میں حیا لب پہ سنسی آئی ہوئی سی
 لہریں سی وہ لبتا ہوا اک کھول کا سہرا
 سہرے میں جھمکتا ہوا اک چاند سا چہرا
 اک رنگ سارخ پر کبھی ہلکا کبھی گہرا
 سرشارنگا ہوں میں حیا جھوم رہی ہے
 ہیں رقص میں افلاک زمیں گھوم رہی ہے
 شاعر کی وفا بڑھ کے قدم چوم رہی ہے
 اے تو کہ ترے دم سے مری زمزمہ خوانی
 ہو تجھ کو مبارک یہ تری نور جہانی
 افکار سے محفوظ رہے تیری جوانی
 چھلکے تری آنکھوں سے شراب اور زیادہ
 مہکیں ترے عارض کے گلاب اور زیادہ

الشکرے زورِ شباب اور زیادہ ۱۹۳۵ء

जश्न-ए-सालगिरह

इक मजमा-ए-रंगी में वह घबराई हुई सी
बैठी है अजब नाज़ से शर्माई हुई सी
आँखों में हया लब पे हँसी आई हुई सी

लहरें सी वह लेता हुआ एक फूल सा सेहरा
सेहरे में भ्रमकता हुआ इक चाँद सा चेहरा
इक रंग-सा रुख पर कभी हल्का कभी गहरा

सरशार निगाहों में हया भूम रही है
हैं रक्स में अफ़लाक ज़मीं घूम रही है
शायर की वफ़ा बढ़ के क़दम चूम रही है

ऐ तू कि तेरे दम से मेरी जमजमा¹ ख़वानी
हो तुझको मुबारक यह तेरी नूर-जहानी
अफ़कार² से महफ़ूज़ रहे तेरी जवानी

छलके तेरी आँखों से शराब और ज़्यादा
महकें तेरे आरिज़³ के गुलाब और ज़्यादा
अल्लाह करे जोर-ए-शबाब और ज़्यादा !

1935



1. शेर-शायरी 2. दुनिया की चिन्ताएँ 3. गाल ।

خانہ بدوش

بستی سے تھوڑی دور چٹانوں کے درمیاں
 کھڑا ہوا ہے خانہ بدوشوں کا کارواں
 اُن کی کہیں زمین نہ اُن کا کہیں مکاں
 پھرتے ہیں یونہی شام و سحر زیرِ آسماں
 دھوپ اور ابر باد کے مارے ہوئے غریب
 یہ وہ ہیں لوگ جن کو غلامی نہیں نصیب
 اس کارواں میں طفل بھی ہیں جوان بھی ہیں
 بوڑھے بھی ہیں، مرلین بھی ہیں، ناتواں بھی ہیں
 میلے پھٹے لباس میں کچھ دیویاں بھی ہیں
 سب زندگی سے تینگ بھی ہیں سرگراں بھی ہیں
 بیدار زندگی سے ہیں پیر و جوان سبھی
 الطافِ شہریار کے ہیں نوحہ خواں سبھی

खानाबदोश

बस्ती से थोड़ी दूर चट्टानों के दरमियाँ
ठहरा हुआ है खाना बदोशों का कारवाँ

उनकी कहीं ज़मीन न उनका कहीं मक़ान
फिरते हैं यून ही शाम-ओ-सहर जेर-ए-आसमाँ

घूप और अब्र-ए-बाद के मारे हुए ग़रीब
यह वह हैं लोग जिनको गुलामी नहीं नसीब

इस कारवाँ में तिफ़ल भी हैं नौजवाँ भी हैं
बूढ़े भी हैं, मरीज भी हैं, नातवाँ¹ भी हैं

मैले फटे लिबास में कुछ देवियाँ भी हैं
सब जिन्दगी से तंग भी हैं, सरगराँ² भी हैं

बेज़ार जिन्दगी से हैं पी-ओ³ जवाँ सभी
अलताफ़-ए-शहरयार के हैं, नौहा-रूवाँ⁴ सभी



1. कमज़ोर 2. काम में लगे हुए 3. बूढ़े लोग 4. गीत राम के गाने वाले ।

نذرِ دل

(ان کے نام)

اپنے دل کو دونوں عالم سے اٹھا سکتا ہوں میں
 کیا سمجھتی ہو کہ تم کو بھی بھلا سکتا ہوں میں
 کون تم سے چھین سکتا ہے مجھے کیا وہم ہے
 خود زلیخا سے بھی تو دامن بچا سکتا ہوں میں
 دل میں تم پیدا کرو پہلے مری سی جڑا تیں
 اور پھر دیکھو کہ تم کو کیا بنا سکتا ہوں میں
 دفن کر سکتا ہوں سینے میں تمہارے راز کو
 اور تم چاہو تو افسانہ بنا سکتا ہوں میں
 تم سمجھتی ہو کہ ہیں پردے بہت سے درمیاں
 میں یہ کہتا ہوں کہ ہر پردہ اٹھا سکتا ہوں میں
 تم کہ بن سکتی ہو ہر محفل میں فردوسِ نظر
 مجھ کو یہ دعویٰ کہ ہر محفل پہ چھا سکتا ہوں میں
 آؤ مل کر انقلاب تازہ تر پیدا کریں!
 دہر پر اس طرح چھا جائیں کہ سب دیکھا کریں

۱۹۳۶ء



नज़र-ए-दिल

(उनके नाम)

अपने दिल को दोनों आलम से उठा सकता हूँ मैं
क्या समझती हो कि तुमको भी भुला सकता हूँ मैं

कौन तुमसे छीन सकता है, मुझे क्या वहम है
खुद जुलैखा¹ से भी तो दामन बचा सकता हूँ मैं

दिल में तुम पैदा करो पहले मेरी सी जुरअतें²
और फिर देखो कि तुमको क्या बना सकता हूँ मैं

दफ्न कर सकता हूँ सीने में, तुम्हारे राज को
और तुम चाहो तो अफ़साना बना सकता हूँ मैं

तुम समझती हो कि हैं पर्दे बहुत से दरमियाँ
मैं यह कहता हूँ कि हर पर्दा उठा सकता हूँ मैं

तुम कि बन सकती हो हर महफ़िल में फिरदौस-ए-नज़र³
मुझको यह दवा कि हर महफ़िल पे छा सकता हूँ मैं

आओ मिलकर इनक़लाब-ए-ताजा तर⁴ पैदा करें !
दहर⁵ पर इस तरह छा जाएँ कि सब देखा करें

1936



1. मिस्र की एक अति सुन्दर स्त्री का नाम 2. होसलामन्दी
3. निगाहों की जन्नत 4. बिलकुल नया 5. ज़माना ।

نظم

مہوشوں کا طرب انگیز تبسم کیا ہے
 مے تو سب کچھ یہ مگر خواب اثر کیوں ہو جائے
 حُسن کی جلوہ گہ ناز کا افسوں سلیم
 یہی قربان گہ ارباب نظر کیوں ہو جائے

میں نے سوچا تھا کہ دشوار ہے منزل اپنی
 اک حسیں بازوئے سیمیں کا سہارا بھی تو ہو
 دشتِ ظلمات سے آخر کو گذرنا ہے مجھے
 کوئی زرخندہ و تابندہ ستارا بھی تو ہو

آگ کو کس نے گلستاں نہ بنانا چاہا
 جل بجھے کتنے خلیل آگ گلستاں نہ بنی
 لوط جانادرِ زنداں کا تو دشوار نہ تھا
 خود زلیخا ہی رفیقِ مہ کنعیاں نہ بنی

नज़म

महविशों¹ का तरब-अंगोज़² तबस्सुम क्या है
 है तो सब कुछ यह मगर ख़्वाब असर क्यों हो जाए
 हुस्न को जलवा गह-ए-नाज़ का अफसू³ तसलीम
 यही क़ुरबा न गिह-ए-अरबाब-ए-नज़र क्यों हो जाए

मैंने सोचा था कि दुशवार है मंज़िल अपनी
 एक हँसी बा-जूए-सीमीं का सहारा भी तो हो
 दस्त-ए-जुलमात⁴ से आख़िर को गुज़रना है मुझे
 कोई रखशन्दा⁵-ओ-ताबिन्दा सितारा भी तो हो

आग को किसने गुलिसताँ न बनाना चाहा
 जल बुझे कितने खलील आग गुलिसताँ न बनी
 टूट जाना दर-ए-ज़िन्दा⁶ का तो दुशवार न था
 खुद जुलैखा⁷ ही रफ़ीक-ए-मह-ए-कनआँ न बनी



1. ख़ूबसूरत जवान लड़कियाँ 2. मिठास से भरा हुआ 3. जादू
 4. अँधेरे के जंगल 5. चमकता हुआ 6. कैदख़ाना 7. मिस्र की
 एक अति सुन्दर स्त्री का नाम ।

مجبوریان

میں آہیں سبھ نہیں سکتا کہ نغمے گانہیں سکتا
 سکوں لیکن مرے دل کو میسر آہیں سکتا
 کوئی نغمے تو کیا اب مجھ سے میرا ساز بھی لے لے
 جو گانا چاہتا ہوں آہ وہ میں گانہیں سکتا
 متاعِ سوز و سازِ زندگی، پیمانہ و بریط
 میں خود کو ان کھلونوں کی بھی اب بہلا نہیں سکتا
 نہ طوفاں روک سکتے ہیں نہ آندھی روک سکتی ہے
 مگر سبھ بھی میں اس قصر میں تک جا نہیں سکتا
 وہ مجھ کو چاہتی ہے اور مجھ تک آ نہیں سکتی
 میں اُس کو پوجتا ہوں اور اُس کو پا نہیں سکتا
 یہ مجبوری سی مجبوری یہ لاچار سی لاچار سی
 کہ اُس کے گیت بھی جی کھول کر میں گانہیں سکتا
 حدیں وہ کھینچ رکھی ہیں حرم کے پاسبانوں نے
 کہ بن مجرم بنے پیغام بھی پہنچا نہیں سکتا



मजबूरियाँ

मैं आहें भर नहीं सकता कि नगमें गा नहीं सकता
सुकू लेकिन मेरे दिल को मयस्सर आ नहीं सकता

कोई नगमें¹ तो क्या अब मुझ से मेरा साज भी ले ले
जो गाना चाहता हूँ आह वह मैं गा नहीं सकता

मता-ए-²-सोज-ओ-साज-ए-जिन्दगी पैमाना-ओ-बरबत
मैं खुद को इन खिलौनों से भी अब बहला नहीं सकता

न तूफाँ रोक सकते हैं न आन्धी रोक सकती है
मगर फिर भी मैं इस क़स्-ए-हँसी³ तक जा नहीं सकता

वह मुझको चाहती है और मुझ तक आ नहीं सकती
मैं उसको पूजता हूँ और उसको पा नहीं सकता

यह मजबूरी सी मजबूरी यह लाचारी सी लाचारी
कि उसके गीत भी जी खोलकर मैं गा नहीं सकता

हदें वह खेंच रखी हैं हरम के पासवानों⁴ ने
कि बिन मुजरिम बने पैग़ाम भी पहुँचा नहीं सकता

1936



1. गीत 2. दौलत 3, खूबसूरत महल 4. हिफ़ाजत करने वाले ।

نظم نورا

وہ تو خیر نوراً وہ اک بنستِ مریم
 وہ مخموراً آنکھیں وہ کیسویں مہرِ خیم
 وہ اک نرس تھی چارہ گز جس کو کہتے
 مداوائے دردِ جگر جس کو کہتے
 جوانی سے طفلی گلے مل رہی تھی
 ہوا چل رہی تھی، کلی کھل رہی تھی
 وہ پُر رعب تیور، وہ شاداب چہرہ
 متاعِ جوانی پہ فطرت کا پہرہ
 سفید اور شفاف کپڑے پہن کر
 مرے پاس آتی تھی اک حور بن کر
 دوا اپنے ہاتھوں سے مجھ کو پلاتی
 ”اب اچھے ہو“ ہر روز مُثر وہ سناتی
 نہیں جانتی ہے میرا نام تک وہ
 مگر بھج دیتی ہے پیغام تک وہ
 یہ پیغام آتے ہی رہتے ہیں اکثر
 کہ کس روز آؤ گے بیمار ہو کر

नज़्म-ए-नूरा

वह नौखेज़ नूरा वह इक बिनत-ए-मरयम¹

वह मखमूर आखें वह गेसू-ए-पुर खम²

वह इक नर्स थी चारागर जिसको कहिये

मदावा-ए-दर्द-ए-जिगर जिसको कहिये

जवानी से तिफली³ गले मिल रही थी

हवा चल रही थी, कली खिल रही थी

वह पुर रोब तेवर वह शादाब चेहरा

माताए जवानी⁴ पे फ़ितरत का पहरा

सफ़ेद और शफ़ाक़ कपड़े पहनकर

मेरे पास आती थी एक हूर बनकर

दवा अपने हाथों से मुझको पिलाती

“अब अच्छे हो” हर रोज़ मुज़दा⁵ सुनाती

नहीं जानती है मेरा नाम तक वह

मगर भेज देती है पैग़ाम तक वह

यह पैग़ाम आते ही रहते हैं अक्सर

कि किस रोज़ आओगे बीमार होकर



1936

1. मरयम की बेटी 2. घुंघराले बाल 4. बचपन 3. जवानी की दौलत 5. समाचार।

نذر علی گڑھ

سرشار نگاہِ نرگس ہوں، پابستہ گیسوئے سنبل ہوں
 یہ میرا چمن ہے میرا چمن، میں اپنے چمن کا بلببل ہوں
 ہر آن یہاں صہبائے کہن اک ساغرِ نو میں ڈھلتی ہے
 کلیوں سے حُسن ٹپکتا ہے پھولوں سے جوانی اُبلتی ہے
 حوطِ اقیحرم میں روشن ہے وہ شمع یہاں بھی جلتی ہے
 اس دشت کے گونے گونے سے اک چوئے حیات اُبلتی ہے
 اسلام کے اس بُت خانے میں اصنام بھی ہیں اور آذر بھی
 تہذیب کے اس میخانے میں شمشیر بھی ہے اور ساغر بھی
 یاں حُسن کی برق چمکتی ہے، یاں نور کی بارش ہوتی ہے
 ہر آہ یہاں اک نغمہ ہے ہر اشک یہاں اک موتی ہے
 ہر شام ہے شامِ مصر یہاں، ہر شب ہے شبِ شیراز یہاں
 مے سارے جہاں کا سوز یہاں اور سارے جہاں کا سائیر یہاں
 یہ دشتِ جنتوں دیوانوں کا، یہ بزمِ وفا پر وانوں کی
 یہ شہرِ طربِ رومانوں کا، یہ خلدِ بریں ارمائوں کی

नज़र-ए-अलीगढ़

सरशार निगाह-ए-नरगिस¹ हूँ, पाबसता²-ए-गेसू-ए-सुंबुल हूँ
यह मेरा चमन है मेरा चमन मैं अपने चमन का बुलबुल हूँ

हर आन यहाँ सहबा-ए-कुहन³ एक सागर-ए-नौ में ढलती है
कलियों से हुस्न टपकता है फूलों से जवानी उबलती है
जो ताक़-ए-हरम में रीशन है वह शमा यहाँ भी जलती है
इस दस्त⁴ के गोशे-गोशे⁵ से एक जू-ए-हयात⁶ उबलती है

इस्लाम के इस बुतखाने में असनाम भी हैं और आज्ञार भी
तहज़ीब के इस मयखाने में, शमशीर भी है और सागर भी

याँ हुस्न की बर्क चमकती है, याँ नूर की बारिश होती है
हर आह यहाँ इक नगमा है, हर अश्क यहाँ इक मोती है

हर शाम है शाम-ए-मिस्र यहाँ, हर शब है शब-ए-शीराज़ यहाँ
है सारे जहाँ का सोज़ यहाँ और सारे जहाँ का साज़ यहाँ

यह दस्त-ए-जुनूँ दीवानों का, यह बज्म-ए-वफा परवानों की
यह शहर तरब रुमानों का, यह खुलदा-ए-बरीं अरमानों की



1. नरगिस की आँखों में डूबा हुआ 2. पैरों में बेड़ियाँ 3. पुरानी शराब 4. जंगल 5. कोने-कोने में 6. जिन्दगी ।

برایبِ شکستہ

اُس نے جب مجھ سے کہا گیت اک سُنا دونا
 سر دہے فضا دل کی، آگ تم لگا دونا
 کیا سین تیور تھے، کیا لطیف لہجہ تھا
 آرزو تھی، حسرت تھی، حکم تھا، تقاضا تھا
 گنگنا کے مستی میں ساز لے لیا میں نے
 چھپر ہی دیا آخر نغمہ وفا میں نے
 یا اس کا دھواں اٹھا ہر نوائے خستہ سے
 آہ کی صدا نکلی برایبِ شکستہ سے

۱۹۳۶ء



बरबत-ए-शिकसता

उसने जब मुझ से कहा गीत इक सुना दो ना
सद है फ़िज़ा¹ दिल की, अंग तुम लगा दो ना

क्या हसीन तेवर थे, क्या लतीफ़² लहजा था
आरजू थी, हसरत थी, हुक़म था, तक्राज़ा था

गुनगुना के मसती में साज़ ले लिया मैंने
छेड़ ही दिया आख़िर नग़म-ए-वफ़ा मैंने

यास का धुआँ उठा हर नवा-ए-खसता से
आह की सदा निकली बरबत-ए-शिकसता से⁴

1937



1. हालत 2. अन्ध्या 3. टूटी हुई आवाज़ 4. टूटा हुआ बाजा ।

مُسا فر

مُسا فر یونہی گیت گائے چلا جا سر رہگزر کچھ سُنائے چلا جا
 تری زندگی سوز و سازِ محبت ہنسائے چلا جا رُلائے چلا جا
 ترے زمزمے ہیں خنک بھی تپاں بھی لگائے چلا جا بجھائے چلا جا
 کوئی لاکھ روکے کوئی لاکھ لٹو کے قدم اپنے آگے بڑھائے چلا جا
 حسین بھی تجھے راستے میں ملیں گے نظر مت ملا، مسکرائے چلا جا
 محبت کے نقتے تمنا کے خا کے بنائے چلا جا، مٹائے چلا جا
 قدامت حدیں کھینچتی ہی رہے گی قدامت کی بنیاد ڈھائے چلا جا
 قسم شوق کی فطرتِ مضطرب کی یونہی نت نئی دھن میں گائے چلا جا

جو پرچم اٹھا ہی لیا سرکشی کا!
 اسے آسماں تک اڑائے چلا جا

۱۹۳۷ء



मुसाफ़िर

मुसाफ़िर यूँही गीत गाए चला जा
 सर-ए-रहगुज़र¹ कुछ सुनाए चला जा
 तेरीज़िन्दगीसोज़-ओ-साज़-ए-मुहब्बत
 हँसाए चला जा रुलाए चला जा
 तेरे ज़मज़मे हैं ख़ुनक भी तपाँ भी
 लगाए चला जा बुभाए चला जा
 कोई लाख रोके कोई लाख टोके
 क़दम अपने आगे बढ़ाए चला जा
 हँसीं भी तुझे रास्ते में मिलेंगे
 नज़र मत मिला मुस्कुराए चला जा
 मुहब्बत के नक्शे तमन्ना के खाके
 बनाए चला जा मिटाए चला जा
 क़दामत² हृदें खेंचती ही रहेगी
 क़दामत की बुनियाद ढाए चला जा
 क़सम शौक की फ़ितरत-ए-मुज़तरब की
 यूँही नित नई धुन में गाए चला जा
 जो परचम उठा ही लिया सरकशी का
 उसे आसमाँ तक उठाए चला जा

□

1937

1. रास्ता चलते 2. पुराने ख्यालात ।

غزل

بربادِ تمنا پہ عتاب اور زیادہ ہاں میری محبت کا جواب اور زیادہ
 روئیں نہ ابھی اہل نظر حال پہ میرے ہوتا ہے ابھی مجھ کو خراب اور زیادہ
 ”آوارہ و مجتوں“ ہی پہ موقوف نہیں کچھ ملنے ہیں ابھی مجھ کو خطاب اور زیادہ
 اٹھینکے ابھی اور بھی طوفاں کمرل سے دیکھو لگا ابھی عشق کے خواب اور زیادہ
 ٹپکے گا لہو اور مرے دیدہ تر سے دھڑکے گا دلِ خانہ خراب اور زیادہ
 ہوگی مری باتوں سے انہیں اور بھی حیرت آئیگا انہیں مجھ سے حجاب اور زیادہ
 اے مطرب بیباک کوئی اور بھی نغمہ
 اے ساتی فیاض شراب اور زیادہ

۱۹۳۸ء



राजल

बरबाद तमन्ना पे अताब¹ और ज्यादा
 हाँ मेरी मुहब्बत का जवाब और ज्यादा
 रोएँ न अभी अहल-ए-नजर हाल पे मेरे
 होना है अभी मुझको खराब और ज्यादा
 आवारा-व-मजनुँ ही पे मौकूफ² नहीं कुछ
 मिलने हैं अभी मुझको खिताब और ज्यादा
 उठेंगे अभी और भी तूफाँ मेरे दिल से
 देखूँगा अभी इश्क के खवाब और ज्यादा
 टपकेगा लहू और मेरे दीदा-ए-तर से
 घड़केगा दिल-ए-खाना खराब और ज्यादा
 होगी मेरी बातों से उन्हें और भी हैरत
 आएगा उन्हें मुझसे हिजाब³ और ज्यादा
 ऐ मुतिरब-ए-बेबाक⁴ कोई और भी नगमा
 ऐ साक़ी-ए-फ़य्याज़⁵ शराब और ज्यादा

1938



1. गुस्सा 2. मुनहसर 3. पर्दा 4. बिना झिझक गानेवाला
 5. दिलवाला साक़ी ।

گھر گھر

یہ جا کر کوئی بزمِ خوباں نہیں کہہ دو!
 کہ اب درِ خورِ بزمِ خوباں نہیں میں
 مبارک تمہیں قصہ و ایوان تمہارے
 وہ دلدادہ قصہ و ایوان نہیں میں
 جوانی بھی سرکش، محبت بھی سرکش
 وہ زندانی زلفِ پچاں نہیں میں
 تڑپ میری فطرت، تڑپتا ہوں لیکن
 وہ زخمی پیکانِ مثرگاں نہیں میں
 دھڑکتا ہے دل اب بھی راتوں کو لیکن
 وہ نوحہ گردِ درو، جبرائیل نہیں میں
 یاسِ لشنہ کامی، بے این تلخ کامی
 رہیں لبِ شکر افشاں نہیں میں
 شراب و شبستاں کا مارا ہوں لیکن
 وہ غرقِ شراب و شبستاں نہیں میں
 قسم نطق کی شعلہ افشانیوں کی

کہ اشعار تو ہوں، اب غزل خواں نہیں کیا ۱۹۴۰ء



गुरेज

यह जाकर कोई बज्म-ए-खूबा¹ में कह दो
 कि अब दर-खूर-ए-बज्म-ए-खूबा² नहीं मैं
 मुबारक तुम्हें कसर-ओ-ऐवा³ तुम्हारे
 वह दिलदादा-ए-कसर-ओ-ऐवा³ नहीं मैं
 जवानी भी सरकश, मुहब्बत भी सरकश
 वह जिनदानी-ए-जुलफ़-ए-पेचा⁴ नहीं मैं
 तड़प मेरी फ़ितरत, तड़पता हूँ लेकिन
 वह जखमी-ए-पैमान-ए-मिजगा⁵ नहीं मैं
 धड़कता है दिल अब भी रातों को लेकिन
 वह नौहा गर-ए-दर्दे-ए-हिजरा⁵ नहीं मैं
 बई तिशनाकामी³, बई तल्खकामी⁴
 रहीन-ए-लब-ए-शकर अफ़शा⁵ नहीं मैं
 शराब-ओ-शबिस्ता⁵ का मारा हूँ लेकिन
 वह गरक शराब-ओ-शबिस्ता⁵ नहीं मैं
 कसम नुक्क की शोला अफ़शानियों की
 कि शायर तो हूँ, अब गज़लख्वा⁵ नहीं मैं

1940



-
1. महबूब की महफ़िल 2. महबूब के दर का भिखारी 3. प्यास
 4. कडुआ नाकाम तजुबा 5. मिठास का आदि ।

حسن و عشق

مجھ سے مست پوچھ ”مرے حسن میں کیا رکھا ہے“
 آنکھ سے پردہ ظلمات اٹھا رکھا ہے
 میری دنیا کہ مرے غم سے جہنم بردوش
 تو نے دنیا کو ابھی فردوس بنا رکھا ہے

مجھ سے مست پوچھ ”ترے عشق میں کیا رکھا ہے“
 سوز کو ساز کے پردے میں چھپا رکھا ہے
 جگمگا اٹھتی ہے دنیا نے تخیل جس سے
 دل میں وہ شعلہ جاںسوز دیا رکھا ہے
 ۱۹۲۰ء



हुस्न-ओ-इशक

मुझसे मत पूछ मेरे हुस्न में क्या रखा है
घ्राँख से पर्दा-ए-जुलमात¹ उठा रखा है

मेरी दुनिया कि मेरे गम से जहन्नुम बरदोश²
तूने दुनिया को भी फ़िरदौस बना रखा है

मुझसे मत पूछ तेरे इशक में क्या रखा है
सोज़³ को साज़⁴ के पर्दे में छिपा रखा है

जगमगा उठती है दुनिया-ए-तखय्युल⁵ जिससे
दिल में वह शोला-ए-जाँसोज़⁶ दबा रखा है

1946



1. घ्राँखेरे 2. कान्धे पर 3. जलन 4. गीत 5. ह्याल 6. दिल की जलन ।

ایک غمگین یاد

مرے پہلو پہ پہلو جب وہ چلتی تھی گلستاں میں
 فراز آسماں پر کہکشاں حسرت سے تکتی تھی
 محبت جب چمک اٹھتی تھی اُسکی چشم خنداں میں
 خمستانِ فلک سے نور کی صہبیا چھلکتی تھی

مرے بازو پہ جب وہ زلفِ شبگوں کھولتی تھی
 زمانہ نکہتِ خلدِ بریں میں ڈوب جاتا تھا
 مرے شانہ پہ جب سر رکھ کے ٹھنڈی سانس لیتی تھی
 مری دنیا میں سوز و ساز کا طوفان آتا تھا

وہ میرا شعر جب میری ہی لے میں گنگنائی تھی
 مناظر جھومتے تھے بام و در کو وجد آتا تھا



एक गमगीन याद

मेरे पहलू-ब-पहलू¹ जब वह चलती थी गुलिसतां में
फराज²-ए-आसमाँ पर कहकशाँ हसरत से तकती थी

मुहब्बत जब चमक उठती थी इसकी चश्म-ए-खन्दाँ³ में
खमिसतान-ए-फलक से नूर की सहब छलकती⁴ थी

मेरे बाजू पे जब वह जुल्फ़-ए-शबगूँ⁵ खोल देती थी
जमाना निकहत-ए-खुलद-ए-बरीं में डूब जाता था

मेरे शाने पे जब सर रख के ठंडी साँस लेती थी
मेरी दुनियाँ में सोज़-ओ-साज़ का तूफान आता था

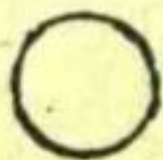
वह मेरा शेर जब मेरी ही लै में गुनगुनाती थी
मनाजिर भूमते थे बाम-ओ-दर को वज्द⁶ आता था

□

-
1. साथ-साथ 2. बुलन्दी 3. हंसती आँखें 4. रौशनी
5. सियाह, काले 6. भूमना ।

غزل

اذن خرام لیتے ہوئے آسماں سے ہم
 ہٹ کر چلے ہیں رگدڑ کا رواں سے ہم
 کیا پوچھتے ہو جھوٹے آئے کہاں سے ہم
 پی کر اٹھے ہیں خمکدہ آسماں سے ہم
 کیوں کر ہوا ہے قاش زمانہ پہ کیا کہیں
 وہ رازِ دل جو کہہ نہ سکے رازِ دواں سے ہم
 ہمدم یہی ہے رگدڑ یا خوش خرام
 گزرے ہیں لاکھ بار اسی کہکشاں سے ہم
 کیا کیا ہوا ہے ہم سے جنوں میں نہ پوچھیے
 اٹھے کبھی زمیں سے کبھی آسماں سے ہم
 بخششی ہیں ہم کو عشق نے وہ جراتیں مجاز
 ڈرتے نہیں سیاستِ اہل جہاں سے ہم



राजल

इज़न-ए-ख़राम¹ लेते हुए आसमाँ से हम
हटकर चले हैं रहगुज़र-ए-कारवाँ से हम

क्या पूछते हो भूमते आए कहाँ से हम
पीकर उठे हैं खुमकदा²-ए-आसमाँ से हम

क्यूँ कर हुआ है फ़ाश ज़माने पे क्या कहें
वह राज़-ए-दिल जो कह न सके राज़दाँ से हम

हमदम यही है रहगुज़र-ए-यार-ए-ख़ुश-ख़राम³
गुज़रे हैं लाख बार इसी कहकशाँ से हम

क्या-क्या हुआ है हमसे जुनूँ में न पूछिये
उलभे कभी जमीं से कभी आसमाँ से हम

बरुशी है हमको इश्क ने वह जुरअत-ए-'मजाज़'
डरते नहीं सियासत-ए-अहल-ए-जहाँ से हम

1941



1. चलने की इजाज़त 2. आसमाँ की शराब 3. अच्छी चाल
वाला ।

غزل

مری وفا کا ترا لطف بھی جواب نہیں
 مرے شباب کی قیمت ترا شباب نہیں
 یہ ماہتاب نہیں ہے کہ آفتاب نہیں
 سبھی ہے حسن، مگر عشق کا جواب نہیں
 مری نگاہ میں جلوے ہیں جلوے ہی جلوے
 یہاں حجاب نہیں ہے یہاں نقاب نہیں
 جنوں بھی حد سے سوا شوق بھی ہو حد سے سوا
 یہ بات کیا ہے کہ میں موردِ عتاب نہیں
 یہاں تو حسن کا دل بھی ہے غم سے صد پارہ
 میں کامیاب نہیں وہ بھی کامیاب نہیں
 مج سے کس کو میں سمجھاؤں کوئی کیا سمجھے
 کہ کامیابِ محبت بھی کامیاب نہیں
 ۱۹۲۳ء

शब्दल

मेरी वफ़ा का तेरा लुत्फ़ भी जवाब नहीं
मेरे शबाब की कीमत तेरा शबाब नहीं

यह माहताब नहीं है कि आफ़ताब नहीं
सभी है हुस्न मगर, इश्क़ का जवाब नहीं

मेरी निगाह में जलवे हैं जलवे-ही-जलवे
यहाँ हिजाब नहीं है यहाँ नकाब नहीं

जुनूँ भी हद से सिवा शौक भी है हद-से सिवा
यह बात क्या है कि मैं मोरिद-ए-इताब¹ नहीं

यहाँ तो हुस्न का दिल भी है ग़म से सद-पारा²
मैं कामयाब नहीं वह भी कामयाब नहीं

'मजाज़' किसको मैं समझाऊँ कोई क्या समझे
कि कामयाब-ए-मुहब्बत भी कामयाब नहीं

1942



1. सजा का मुसतहक 2. सौ टुकड़ों में ।

مجھے جانا ہے اک دن

مجھے جانا ہے اک دن تیری بزم ناز سے آخر
 ابھی سچہ درد ٹیکے گا مری آواز سے آخر
 ابھی سچہ آگ اٹھے گی شکستہ ساز سے آخر
 مجھے جانا ہے اک دن تیری بزم ناز سے آخر
 ابھی تو حُسن کے پیروں پہ ہے جبرِ حنا بندی
 ابھی ہے عشق پر آئینِ فرسودہ کی پابندی
 ابھی حاوی ہے عقل و روح پر جھوٹی خداوندی
 مجھے جانا ہے اک دن تیری بزم ناز سے آخر
 ابھی تہذیبِ عدل و حق کی کشتی کھے نہیں سکتی!
 ابھی یہ زندگی وادِ صداقت دے نہیں سکتی!
 ابھی انسانیتِ دولت سے لکر لے نہیں سکتی!
 مجھے جانا ہے اک دن تیری بزم ناز سے آخر

मुझे जाना है इक दिन

मुझे जाना है इक दिन तेरी बज्म-ए-नाज़ से आखिर
 अभी फिर दर्द टपकेगा मेरी आवाज़ से आखिर
 अभी फिर आग उठेगी शिकसता-साज़¹ से आखिर
 मुझे जाना है इक दिन तेरी बज्म-ए-नाज़ से आखिर
 अभी तो हुस्न के पैरों पे है जब्र-ए-हिना बन्दी
 अभी है इश्क़ पर आईन-ए-फ़रसूदा² की पाबन्दी
 अभी हावी है अक्ल-ओ-रूह पर भूठी खुदाबन्दी
 मुझे जाना है इक दिन तेरी बज्म-ए-नाज़ से आखिर
 अभी तहज़ीब अदल-ओ-हक़ की कश्ती खे नहीं सकती
 अभी यह ज़िन्दगी दाद-ए-सदाक़त³ दे नहीं सकती
 अभी इन्सानियत दौलत से टक्कर ले नहीं सकती
 मुझे जाना है इक दिन तेरी बज्म-ए-नाज़ से आखिर

□

1. टूटा बाजा 2. पुराना क़ानून 3. सच्चाई की तारीफ़।

غزل

سازگار ہے ہمدم ان دنوں جہاں اپنا
 عشق شادماں اپنا شوق کامراں اپنا
 آہ بے اثر کس کی نالہ نار سا کس کا
 کام بارہا آیا جذبہ نہاں اپنا
 کب کیا تھا اس دل پر حُسن نے کرم اتنا
 مہرباں اور اس درجہ کب تھا آسماں اپنا
 الجھنوں سے گھیرائے میگردے میں در آئے
 کس قدر تن آساں ہے ذوقِ رائیگاں اپنا
 کچھ نہ پوچھ اے ہمدم ان دنوں مرا عالم
 مطربِ حسین اپنا ساتی جو اں اپنا
 عشق اور رسوائی کون سی نئی شے ہے
 عشق تو ازل سے ستھار سوائے جہاں اپنا
 تم مجاز دیوانے مصلحت سے بیگانے
 ورنہ ہم بنا لیتے تم کو راز داں اپنا



राजल

साजगार है हमदम¹ इन दिनों जहाँ अपना
इश्क़ शादमाँ अपना शौक़ कामराँ² अपना

आह-ए-बेअसर किसकी नाला-ए-नारसा किसका
काम बारहा आया जज़्बा-ए-नेहाँ³ अपना

कब किया था इस दिल पर हुस्न ने करम इतना
महरबाँ और इस दर्जा कब था आसमाँ अपना

उलझनों से घबराए मयकदे में दर आए
किस कदर तन आसाँ है जौक़-ए-रायगाँ⁴ अपना

कुछ न पूछ ऐ हमदम इन दिनों मेरा आलम
मुतरिब-ए-हँसीं अपना साकी-ए-जवाँ अपना

इश्क़ और रुसवाई कौन-सी नई शै है
इश्क़ तो अज़ल से था रुसवा-ए-जहाँ अपना

तुम 'मजाज़' दीवाने मसलेहत से बेगाने
वरना हम बना लेते तुमको राजदाँ अपना

-1948



1. साथी 2. कामयाब 3. छिपा हुआ जज़्बा 4. बेकार ।

شرارے

خود کو پہلانا تھا آخر خود کو پہلانا رہا
 میں بہائیں سوز و درون ہنستا ہاگاتا رہا
 مجھ کو احساسِ فریبِ رنگ و بو ہوتا رہا
 میں مگر کچھ بھی فریبِ رنگ و بو کھاتا رہا
 میری دنیا ہے وفا میں کیا سو کیا ہونے لگا
 اک در کچھ بند مجھ پر ایک وامونے لگا
 اک نگاہِ ناز کی پھرنے لگیں آنکھیں مجاز
 اک بُت کا فر کا دل درد آشنا ہونے لگا

۱۹۲۵ء



शरारे

खुद को बहलाना था आखिर खुद को बहलाता रहा
 मैं बई-सोज-ए-दरूं? हंसता रहा गाता रहा

मुझको एहसास-ए-फरेब-ए-रगो-ओ-बू होता रहा
 मैं मगर फिर भी फरेब-ए-रगो-ओ-बू खाता रहा

मेरी दुनिया-ए-व.का में क्या-से-क्या होता रहा
 इक दरीचा बन्द मुझ पर एक वा² होने लगा

इक निगाह-ए-नाज़ की फिरने लगीं आँखें 'मजाज़'
 एक बुत-ए-काफ़िर का दिल दर्द-आशना³ होने लगा ।

1945



1. अन्दर की जलन 2. खुलना 3. दर्द से वाकिफ़ होना ।

گیت

کون مرے سینے میں آ کر رہ رہ کر مسکائے

امرت رس برسائے

من کی کلی کھل جائے

کون مرے سینے میں آ کر رہ رہ کر مسکائے

کون یکا یک سامنے آ کر نین سے نین ملائے

اور کبھی چھپ جائے

چھپ چھپ کر لپچائے

کون مرے سینے میں لگا رہ رہ کر مسکائے

جیون کے آکاش پہ چمکے رہ رہ کر مسکائے

سندر روشن نیارا

من میں جوت جگائے

کون مرے سینے میں آ کر رہ رہ کر مسکائے

شوخی، سچیلہ، رسیلا، چنچل چھڑ کر تڑپائے

میں روٹھوں وہ منائے

بہلا کر سمجھائے

کون مرے سینے میں آ کر رہ رہ کر مسکائے



गीत

कौन मेरे सपने में आकर रह-रह कर मुसकाए

अमृत रस बरसाए
मनकी कली खिल जाए.

कौन मेरे सपने में आकर रह-रहकर मुसकाए
कौन यकायक सामने आकर नैन से नैन मिलाए

और कभी छिप जाए
छिप-छिप कर ललचाए

कौन मेरे सपने में आकर रह-रह कर मुसकाए
जीवन के आकाश पे चमके रह-रह कर मुसकाए

सुन्दर रौशन न्यारा
मन में जोत जगाए

कौन मेरे सपने में आकर रह-रह कर मुसकाए
शोख, सजीला¹, रसीला, चंचल छेड़ करे तड़पाए

मैं रुठूं वह मनाए
बहलाकर समझाए

कौन मेरे सपने में आकर रह-रह कर मुसकाए

□

1. दिल को भाने वाला ।

غزل

ساتی گلغام با صد اہتمام آہی گیا
 نغمہ بر لب، خم بہ سر بادہ بجم آہی گیا
 اپنی نظروں میں نشاۃ جلوۂ خواباں لئے
 خلوتی خاص سوئے بزم عام آہی گیا
 میری دنیا جگمگا اٹھی کسی کے نور سے
 میرے گردوں پر مرامہ تمام آہی گیا
 جھوم جھوم اٹھے شجر کلیوں نے آنکھیں کھولیں
 جانب گلشن کوئی مست خرام آہی گیا
 پھر کسی کے سامنے چشم تمنا جھک گئی
 شوق کی شوخی میں رنگِ احرام آہی گیا

(مسل)

राजल

साक़ी-ए-गुलफ़ाम¹ बा सद एहतेमाम आ ही गया
नग़मा बर लब, खुम बसर, बादा बजाम² आ ही गया

अपनी नज़रों में निशात-ए-जलवा-ए-खूबां³ लिए
खिलवती-ए-खास सू-ए-बज़म-ए-आम आ ही गया

मेरी दुनिया जगमगा उठी किसी के नूर से
मेरे गरदूं पर मेरा माह-ए-तमाम आ ही गया

भूम-भूम उठे शजर कलियों ने आँखें खोल दीं
जानिब-ए-गुलशन कोई मस्त-ए-खिराम⁴ आ ही गया

फिर किसी के सामने चश्म-ए-तमन्ना भुक गई
शौक़ की शोखी में रंग-ए-एहतेराम आ ही गया ।

□

1. शाबर का महबूब 2. प्याला और सुराही लेकर 3. खूबसूरत
महबूबों का दीदार 4. मस्त चाल ।

میری شب اب میری شب ہے، میرا بارہ میرے جام
 وہ میرا سرور وال ماہِ تمام آہی گیا
 بارہا ایسا ہوا ہے یاد تک دل میں نہ سہتی
 بارہا مستی میں لب پر ان کا نام آہی گیا
 زندگی کے خاکہ سادہ کو رنگیں کر دیا
 حسن کام آئے نہ آئے عشق کام آہی گیا
 کھل گئی سہتی صاف گردن کی حقیقت لے مجھ سے
 خیرت گذری کہ شاہین زیرہ دام آہی گیا
 ۱۹۲۵ء



मेरी शब अब मेरी शब है मेरा वादा मेरा जाम¹
वह मेरा सुरूर वाँ माह-ए-तमाम आ ही गया

बारहा ऐसा हुआ याद तक दिल में न थी
बारहा मस्ती में लब पर उनका नाम आ ही गया

जिन्दगी के खाका-ए-सादा को रँगों कर दिया
हुस्न काम आए-न-आए इश्क काम आ ही गया

खुल गई थी साफ़ गरदूँ² की हकीकत ऐ 'मजाज'
खैरियत गुजरी कि शाहीं जेर-ए-दाम³ आ ही गया !

1945



1. शराब और प्याला 2. आसमान की असलियत 3. जाल के अन्दर ।

اعتراف

اب مرے پاس تم آئی ہو تو کیا آئی ہو؟
 میں نے مانا کہ تم اک پیکرِ رعنائی ہو
 چمنِ دہر میں رُوحِ چمن آئی ہو
 طلعتِ مہر ہو، فردوس کی برنائی ہو
 بنتِ مہتاب ہو گر دوں سے اتر آئی ہو
 مجھ سے ملنے میں اب اند لپٹنہ رسوائی ہے
 میں نے خود اپنے کئے کی یہ سزا پائی ہے
 خاک میں آہ ملائی ہے جوانی میں نے
 شعلہ زاروں میں جلائی ہے جوانی میں نے
 شہرِ خوباں میں گتوائی ہے جوانی میں نے
 خواہنگا ہوں میں جگائی ہے جوانی میں نے

एतेराऊ

अब तुम मेरे पास आई हो तो क्या आई हो ?

मैंने माना कि तुम इक पैकर-ए-रानाई¹ हो
चमन-ए-दहर में रह-ए-चमन आराई हो

तलअत-ए-महर हो, फिरदौस की बरनाई² हो
बिन्ते महताब हो गरदू³ से उतर आई हो

मुझसे मिलने में अब अन्देशा-ए-रुसवाई है
मैंने खुद अपने किये की यह सजा पाई है

खाक में आह मिलाई है जवानी मैंने
शोला जारों में जलाई है जवानी मैंने

शहर-ए-खूबाँ में गँवाई है जवानी मैंने
ख्वाबगाहों में जगाई है जवानी मैंने



1. खूबसूरती शरीर वाली 2. सुन्दरता 3. आसमान ।

غزل

شوق کے ہاتھوں آئے دل مضطر کیا ہونا ہے کیا ہوگا
 عشق تو رسوا ہو ہی چکا ہے حسن بھی کیا رسوا ہوگا
 حسن کی بزم خاص میں جا کر اس سے زیادہ کیا ہوگا
 کوئی نیا پیمانہ باندھیں گے کوئی نیا وعدا ہوگا
 چارہ گری سے آنکھوں پر اس چارہ گری سے کیا ہوگا
 درد کہ اپنی آپ دو ہے تم سے کیا اچھا ہوگا
 واعظ سادہ لوح سے کہہ دو چھوڑے عفتی کی باتیں
 اس دنیا میں کیا رکھا ہے اس دنیا میں کیا ہوگا
 تم بھی مجاز انسان ہو آخر لاکھ چھپاؤ عشق اپنا
 یہ بھی دگر کھل جائے گا یہ راز مگر افشا ہوگا

۱۹۲۵ء



शब्दल

शोक के हाथों ऐ दिल-ए-मूजतर¹ क्या होना है क्या होगा
इश्क तो रुसवा² हो ही चुका है हुस्न भी क्या रुसवा होगा

हुस्न की बज़म-ए-खास में जाकर इससे ज्यादा क्या होगा
कोई नया पैमा³ बाँधेंगे कोई नया वादा होगा

चारागरी सर आँखों पर इस चारागरी से क्या होगा
दर्द कि अपनी आप दवा है, तुमसे क्या अच्छा होगा

वाइज़-ए-सादा लौह⁴ से कह दो छोड़ें उक़बा⁵ की बातें
इस दुनियाँ में क्या रखा है, उस दुनियाँ में क्या होगा

तुम भी 'मजाज़' इन्सान हो लाख छुपाओ इश्क अपना
ये भेद मगर खुल जाएगा ये राज मगर अफ़शा⁶ होगा

1945



1. बेचैन दिल 2. बदनाम 3. वादा 4. सादा मिजाज़
5. परलोक 6. जाहिर।

غزل

آسماں تک جو نالہ پہنچا ہے دل کی گہرائیوں سے نکلا ہے
 میری نظروں میں حشر بھی کیا ہے میں نے اُن کا جلال دیکھا ہے
 جلوۂ طور خوابِ موسیٰ ہے کس نے دیکھا ہے کس کو دیکھا ہے
 ہائے انجام اس سفرِ سفینے کا نا خدا نے جسے ڈبو یا ہے
 آہ کیا دل میں اب لہو بھی نہیں آج اشکوں کا رنگ پھیکا ہے
 جب بھی آنکھیں ملیں اُن آنکھوں سے دل نے دل کا مزاج پوچھا ہے
 وہ جوانی کہ سکتی حریفِ طرب آج بربادِ جامِ و صہبا ہے
 کون اُٹھ کر چلا مقابل سے جس طرف دیکھئے اندھیرا ہے
 پھر مری آنکھ ہو گئی نمناک پھر کسی نے مزاج پوچھا ہے

سچ تو یہ ہے مجاز کی دنیا
 حُسن اور عشق کے سوا کیا ہے

۱۹۴۵ء



ग़ज़ल

आसमाँ तक जो नाला¹ पहुँचा है
 दिल की गहराइयों से निकला है
 मेरी नज़रों में हश््र भी क्या है
 मैंने उनका जलाल² देखा है
 जलवा-ए-तूर स्वाब-ए-मूसा है
 किसने देखा है किसको देखा है
 हाय अन्जाम उस सफ़ीने का
 नाखुदा ने जिसे डुबोया है
 आह क्या दिल में अब लहू भी नहीं
 आज अश्कों का रंग फीका है
 जब भी आँखें मिलीं उन आँखों से
 दिल ने दिल का मिज़ाज पूछा है
 वह जवानी कि थी हरीफ़-ए-तरब³
 आज बरबाद जाम-ओ-सहबा है
 कौन उठकर चला मुक्काबिल से
 जिस तरफ़ देखिये अन्धेरा है
 फिर मेरी आँख हो गई नमनाक⁴
 फिर किसी ने मिज़ाज पूछा है
 सच तो यह है 'मजाज़' की दुनियाँ
 हुस्न और इश्क़ के सिवा क्या है !



1945

1. दिल की आवाज़ 2. गुस्सा 3. नाज़ के काबिल 4. भीगी हुई ।

الہ آباد سے

بتاریخ ۲ فروری ۱۹۴۵ء جس دن سنگم کی رومان خیز سرزمین پر شبن ساگر
لکھنے والے شاعر کی سالگرہ منائی گئی

الہ آباد میں ہر سو ہیں چہرے کہ دلی کا شرابی آگیا ہے
 بہ صد آوارگی، با صد تباہی بہ صد خانہ خرابی آگیا ہے
 گللابی لاؤ، چھلکاؤ، لتڑھاؤ کہ شیدائے گللابی آگیا ہے
 نگاہوں میں خمارِ بادہ لے کر نگاہوں کا شرابی آگیا ہے
 وہ سرکش، رہزنِ ایوانِ خواباں بہ عنزمِ باریابی آگیا ہے
 وہ رسوائے جہاں، تاکامِ ذوراں بہ زعمِ کامیابی آگیا ہے
 بتانِ نازِ فرما سے یہ کہہ دو کہ اکِ ترکِ شہابی آگیا ہے
 نوا سنجانِ سنگم کو بتا دو حریت، فاریابی آگیا ہے
 یہاں کے شہر پاروں کو خبر دو کہ مردِ انقلابی آگیا ہے

۱۹۴۵ء

इलाहाबाद से

[2 फरवरी 1945 जिस दिन संगम की रुमनाखोज सरखमीन पर जश्न-ए-सालगिरह लिखने वाले शायर की सालगिरह मनाई गई।]

इलाहाबाद में हरसू¹ हैं चरचे
 कि दिल्ली का शराबी² आ गया है
 ब-सद-आवारगी³, बासद तबाही⁴
 ब-सद खाना खराबी आ गया है
 गुलाबी लाओ, छलकाओ लुंठाओ
 कि शौदा-ए-गुलाबी⁵ आ गया है
 निगाहों में खुमार-ए-बादा⁶ लेकर
 निगाहों का शराबी आ गया है
 वह सरकश, रहजन-ए-ऐवान-ए-खूबा⁷
 बा अजम-ए-बारयाबी आ गया है
 वह रुसवाए जहाँ नाकाम-ए-दौरा
 बाजोम-ए-कामयाबी आ गया है
 बुताने नाज फरमा से यह कह दो
 कि एक तुर्क-ए-शहाबी आ गया है
 नवा सनजान-ए-संगम को बता दो
 हरीफ़-ए-फारयाबी आ गया है
 यहाँ से शहर पारों⁷ को खबर दो
 कि मर्द-ए-इनकलाबी आ गया है



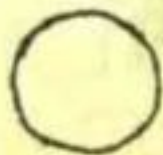
1945

1. सभी तरफ 2. आवारगी के साथ 3. तबाही के साथ
 4. शराबी 5. शराब का नशा 6. हसीनों के महल का डाकू
 7. शहर के साथियों को बताओ।

آج

کار فرما سچہ مرادوقِ غزلخوانی ہے آج
 سچہ نفس کا ساز گرم شعلہ افشانی ہے آج
 سچہ نگاہِ شوق کی گرمی ہے اور روئے نگار
 سچہ عرقِ آلودِ اکِ کافر کی پیشانی ہے آج
 سچہ مرے لب پر قصیدے ہیں لبِ رخسار کے
 سچہ کسی چہرے پہ تابانی سی تابانی ہے آج
 حسنِ اس درجہ نشاطِ حسن میں طو و با ہوا
 انکھڑیاں بے خود شمیم زلف دیوانی ہے آج
 لرزشِ لب میں شرابِ اشعر کا طوفان ہے
 جنبشِ مژگاں میں انسونِ غزلخوانی ہے آج
 وہ نفس کی زمزمہ سنجی نظر کی گفتگو
 سینہ معصوم میں اک طرفہ طغیانی ہے آج
 یاں بہ ایس عالمِ غرورِ یوسفیت بھی نہیں
 واں زلیخائی بہ عزمِ چاکد امانی ہے آج

۱۹۲۵ء



आज

कार फ़रमा फिर मेरा जौक¹-ए-गज़लख़्वाणी है आज
 फिर नफ़स का साज़-ए-गर्म शोला अफ़शानी है आज
 फिर निगाह-ए-शौक की गरमी है और हुए-निगार
 फिर अरक़ आलूद इक काफ़िर की पेशानी है आज
 फिर मेरे लब पर क़सीदे हैं लब-ओ-रख़सार के
 फिर किसी चेहरे पे ताबानी-सी-तबानी है आज
 हुस्न इस दर्जा निशात²-ए-हुस्न में डूबा हुआ
 अंखड़ियाँ बे खुद शमीम-ए-जुल्फ़ दीबानी है आज
 लरज़िश-ए-लब में शराब-ओ-शेर का तूफ़ान है
 जुमबिश-ए-मिज़गां³ में अफ़सूँन-ए-गज़लख़्वाणी है आज
 वह नफ़स की ज़मज़मा सनजी⁴ नज़र की गुफ़तगू
 सीना-ए-मासूम में इक तुरफ़ा तुग़यानी है आज
 याँ बई आलम गुरुर-ए-यूसुफ़ीयत भी नहीं
 बाँ जुलैखाई व अज़म-ए-चाकदामानी है आज ।

1945



1. शौक 2. खुशी 3. भवों की हरकत 4. शेर शायरी ।

مہمان

آج کی رات اور باقی ہے

کل تو جانا ہی ہے سفر پہ مجھے
زندگی منتظر ہے منہ سچاڑے
زندگی مفاک و خون میں لٹھری
آنکھ میں شعلہ ہائے تند لئے

دو گھڑی خود کو شادماں کر لیں
آج کی رات اور باقی سے

چلنے ہی کو ہے اک سموم ابھی
رقص فرما ہے روحِ بربادی
بربریت کے کارروانوں سے
زلزلے میں ہے سینہ گیتی

زوقِ پنہاں کو کامراں کر لیں
آج کی رات اور باقی ہے

मेहमान

आज की रात और बाकी है

कल तो जाना ही है सफ़र पे मुझे
जिन्दगी मुतज़िर हैं मुंह फाड़े
जिन्दगी खाक-ओ-खून में लुथड़ी
आँख में शोला हाय तुंद¹ लिये

दो घड़ी खुद को शादमाँ कर ले
आज की रात और बाकी है

चलने ही को है इक समूम² अभी
रक्स फ़रमा है रूह-ए-बरबादी
बरबरीयत³ के कारखानों से
जलजले में है सीना-ए-गेती

जौक़-ए-पिनहाँ को कामराँ कर लें
आज की रात और बाकी है !



1. तेज़ लपट और गुस्सा 2. गरम जहरीली हवा 3. जुल्म ।

بول! آری اودھرتی بول!

بول! آری اودھرتی بول!

راج سنگھاسن ڈانوا ڈول

بادل بجلی رین اندھیاری دکھ کی ماری پر حساب ساری

بوڑھے بچے سب دکھیا ہیں دکھیا نہ ہیں دکھیا ناری

بستی بستی لوٹ مچی ہے سب بننے ہیں سب بیوپاری

بول! آری اودھرتی بول!

راج سنگھاسن ڈانوا ڈول

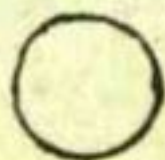
کلجک میں جگ کے رکھوالے چاندی والے سونے والے

دلیسی ہوں یا پردلیسی ہوں نیلے پیلے گورے کالے

مکھی بھنگے بھن بھن کرتے ڈھونڈتے ہیں مکڑی کے جالے

بول! آری اودھرتی بول!

راج سنگھاسن ڈانوا ڈول ۱۹۴۵ء



बोल ! अरी ओ धरती बोल !

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंघासन¹ डाँवा डोल !

बादल बिजली रैन-अधियारी²
दुःख की मारी प्रजा सारी

बूढ़े-बच्चे सब दुखिया हैं
दुखिया नर है दुखिया नारी

बस्ती-बस्ती लूट मची है
सब बनिये हैं सब व्योपारी

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंघासन डाँवा डोल !

कलजुग³ में जुग के रखवाले
चाँदी वाले सोने वाले

देसी हों या परदेसी हों
नीले, पीले गोरे, काले

मक्खी भुंगे भुन-भुन करते
ढूँडे हैं मकड़ी के जाले

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंघासन डाँवा डोल !

1945



گیت

آ رہی ہے نرالی بہار
 جی میں جو کچھ ہے وہ کوئی کیسے کہے
 میری رگ رگ میں نس نس مدرا ہے
 بچ رہے ہیں خوشی کے ستار

آ رہی ہے نرالی بہار
 میری آشاؤں نے آج پہلے پہل
 حسرتوں کا بنایا ہے رنگیں مٹل
 کوئی کھولے ہے جس کے دوار

آ رہی ہے نرالی بہار
 تارے ناچیں ہواؤں میں چھاگل بچے
 میری دنیا بچے اور پل پل بچے
 ہر طرف اک انوکھا نکھار

آ رہی ہے نرالی بہار
 میری دنیا ہے کیا جگمگانی ہوئی
 ہر طرف زندگی مسکرائی ہوئی
 من ہے کیسی خوشی سے دوچار
 آ رہی ہے نرالی بہار

गीत

आ रही है निराली बहार

जी में जो कुछ है वह कोई कैसे कहे
मेरी रग-रग में नस-नस में मदरा¹ बहे

बज रहे हैं खुशी के सितार
आ रही है निराली बहार

मेरी आशाओं ने आज पहले पहल
हसरतों का बनाया है रँगों महल

कोई खोले है जिसके द्वार²
आ रही है निराली बहार

तारे नाचें हवाओं में छागल बजे
मेरी दुनिया सजे और पल-पल सजे

हर तरफ़ इक अनोखा निखार
आ रही है निराली बहार

मेरी दुनिया है क्या जगमगाई हुई
हर तरफ़ जिन्दगी मुसकुराई हुई

मन है कैसी खुशी से दोचार
आ रही है निराली बहार !



1. शराब 2. दरवाजे ।

بیتانِ حرم

کیا کہوں میں رات کس محفل میں تھا گرم نوا
 نغمہ و نکتہ کا وہ طوقان وہ سٹھنڈی ہوا
 دیدنی تھا نازنینان تمدن کا بہجوم
 بے حقیقت تھے نگاہوں میں مہ و مہر و نجوم
 ناز پرور وہ حسیں، افکارِ غم سے بے نیاز
 مہ جبینان حرم قیدِ حرم سے بے نیاز
 جن کی اک جنبش سے بنیاد حرم میں ارتعاش
 جن کی اک سٹھو کر سے زنجیرِ قدمت پاش پاش
 بن گیا تھا ایک بیک فردوسِ کیف و ابسناط
 ایک دیرینہ کرم فرما کا ایوانِ نشاط
 نرم صوفے گود میں فردوسِ رعنائی لئے
 زلف کے خم، مرمری شانوں کی بزائی لئے
 وہ حسیں پیشانیاں آئینہ تمکینِ ناز
 وہ رسیلی مدھ بھری آنکھیں وہ مژگانِ دراز

(مسل)

बुतान-ए-हरम

क्या कहूँ मैं रात किस महफ़िल में था गर्म-ए-नवा¹
 नगमा-ओ-निकहत का वह तूफान वह ठंडी हवा
 दीदनी था नाज़नीनान-ए-तमद्दुन का हुजूम
 बे हकीकत थे निगाह-ओ-में महो महर-ओ-नुजूम
 नाज़ परवर वह हसी अफ़कार-ए-गम से बे-नियाज़
 महज़बीनान-ए-हरम, क़द-ए-हरम से बे-नियाज़
 जिनकी एक जुबिश से बुनयाद-ए-हरम मे इरतेआश²
 जिनकी एक ठोकर से जंजीर-ए-क़दा मत³ पाश-पाश
 बन गया था यक-ब-यक फ़िरदौस-ए-कैफ़-ओ-इनबेसात⁴
 एक देरीना करम फरमा का ऐवान-ए-निशात
 नर्म सौफ़े गोद में फ़िरदौस रानाई के लिए
 जुल्फ़ के खम मरमरीं शानो की बरनाई के लिए
 वह हसीं पेशानियाँ आईना-ए-तमक़ीन-ए-नाज़
 वह रसीली मदभरी आँखें वह मिजगान-ए-दराज़



1. जोश से हिस्सा लेना 2. हलचल 3. पुरानी रविश और
 तरीका 4. खुशी ।

وہ سُبک چاندی سے پکیر وہ جوانی کا نکھار
 آؤر فِطرت کی صنّاعی کے زندہ شاہکار
 رُخ پہ شادابی، لبوں میں سرسبم برقِ پاش
 چُست پیراہن، نمایاں جسمِ سیمیں کی تراش
 شوخ آنکھیں بادۂ گلگوں کے پیمانے لئے
 گیسوئے شبِ رنگِ پیچ و خم میں افسانے لئے
 آہ وہ حُسنِ مقابلِ وہ جمالِ ہم نشین
 دامنِ موجِ ہوا میں اک بہشتِ عمرِ سیا
 اک طرف سحرِ ملاحت، اک طرف افسونِ ناز
 اک طرف زلفِ بریدہ، اک طرف زلفِ دراز
 آنچلوں کی سرسراہٹ، زمزمے گاتی، ہوئی
 پیرہن سے نکھتِ خلدِ بریں آتی، ہوئی
 آہ وہ دوشیزہ لب، گلریز لب، گلنار لب
 آہ وہ لبِ آشنا لب، شوخ لب، خونبار لب

(مسل)

वह सुबक चाँदी से पैकर वह जवानी का निखार
आज़र-ए-फ़ितरत की सन्नाई¹ के जिन्दा शाहकार²

रुख पे शादाबी, लबों में रस तबस्सुम बर्कपाश
चुस्त पैराहन, नुमार्यां जिस्म-ए-सीमी³ की तराश

शोख आँखें बाद-ए-गुलगूं के पैमाने लिए
गेसू-ए-शब रँग पेच-ओ-ख़म में अफ़साने लिए

आह वह हुस्न-ए-मुक्काबिल वह जमाल-ए-हम नशीं
दामन-ए-मौज-ए-हवा में इक बहिशत-ए-अमबंरीं

इक तरफ़ सहर-ए-मलाहत, इक तरफ़ अफ़सून⁴-ए-नाज
इक तरफ़-ए-जुल्फ़े बुरीदा, इक तरफ़-ए-जुल्फ़े दराज़

आँचलों की सरसराहट, ज़मज़मे गाती हुई
पैराहन से निकहत-ए-खुल्द-ए-बरीं आती हुई

आह वह दोशीज़ा लब, गुलरेज़ लब, गुलनार लब
आह वह लब आशना लब, शोख लब खूँबार लब



1. बनावट 2. नमूना 3. चाँदी जैसा शरीर 4. जादू लिये हुए।

وہ حجاب آگیں تکلم، وہ رسیلے قہقہے!
 وہ نشاط آگیں تبسم، وہ سُریلے قہقہے!
 قہقہے جن میں صبا کا راگ سیاروں کے گہریت
 نقری نے کی صدا جنت کے مہ پاروں کے گہریت
 جام زریں کی کھنک سی قلقلِ مینا کے ساتھ
 قدسیوں کی لے سُرودِ بریطِ زہرا کے ساتھ
 شوخی لب ناز فرما خندہ لے باک پر
 نور و موسیقی کی اک بارش سی فرشِ خاک پر
 گفتگو کچھ اس سلیقے سے کچھ اس انداز سے
 دل بچانا سخت مشکل تھا کمندِ ناز سے
 وہ لچک سی جسم نازک میں خود اپنے بار سے
 چھوٹ نکلیں تھیں شعاعیں عارض و خسار سے
 وہ سمٹنے کی ادا طوفانِ رعنائی کے ساتھ
 فوقِ خود بینی مذاقِ بزمِ آرائی کے ساتھ

(سلسل)

वह हिजाब आगीं¹ तकल्लुम, वह रसीले कहकहे !
वह निशात आगीं² तबस्सुम, वह सुरीले कहकहे !

कहकहे जिन में सबा का राग सय्यारों के गीत
नुकरई³ नै की सदा जन्नत के महपारों के गीत

जाम-ए-जरी की खुनक-सी कुलकुल-ए-मीना के साथ
कुदसियों की लै सुहद-ए-बरबत-ए-जोहरा के साथ

शोखि-ए-लब नाज फ़रमा खन्दा-ए⁵-बेबाक पर
नूर-ओ-मौसीकी की इक बारिश-सी फ़र्म-ए-खाक पर

गुफ्तगू कुछ इस सलीके से कुछ इस अन्दाज से
दिल बचाना सस्त मुशकिल था कमन्द-ए-नाज से

वह लचक-सी जिस्म-ए-नाजुक में खुद अपने बार से
फूट निकलीं थीं शुआएँ आरिज-ओ-रुखसार से

वह सिमटने की अदा तूफ़ान-ए-रानाई के साथ
जौक-ए-खुदबीनी मज़ाक-ए-बज़म आराई के साथ

□

1. परदे के साथ 2. खुशी के साथ 3. मीठी आवाज 4. खुशी
5. हँसते हुए ।

عارضوں پر اک گللابی بن ساما تھو پر و مک
 انکھڑیوں میں اک سُور فتح مندی کن جھلک
 بام و در پر اک تبسم سا، فضا گل رنگ تھی!
 جنبشِ مشرگاں و صطرتے دل سے ہم آہنگ تھی
 میرا نغمہ باعثِ دلداریِ خوباں تو ہے
 میرا نالہ خیسے وجہ نشاطِ جاں تو ہے
 ۱۹۴۶ء



आरिजों पर इक गुलाबीपन सा साथों पर दमक¹
 अँखडियों में एक सुहर-ए-फ़तह मन्दी की भलक

बाम-ओ-दर³पर एक तबस्सुमसा, फ़िजा गुलरँग थी !

जुमबिश-ए-मिजगाँ धड़कते दिल से हम आहँग⁵ थी

मेरा नगमा बाईस-ए-दिलदारी-ए-खूबाँ तो है

मेरा नाला खैर से वजह निशात-ए-जाँ तो है !

1946



1. चमकना 2, खुशी 3. छत और दरवाज़े 4. भावों की हर-
 कत 5. मिली हुई।

غزل

نہیں یہ فکر کوئی رہبر کا بل نہیں ملتا
 کوئی دنیا میں مانوس مزاج دل نہیں ملتا
 کبھی ساحل پہ رہے شوق طوفانوں سے طکر اٹس
 کبھی طوفانوں میں رہے فکر ہے ساحل نہیں ملتا
 یہ آتا کوئی آنا ہے کہ بس رسماً چلے آئے
 یہ ملتا خاک ملتا ہے کہ دل سے دل نہیں ملتا
 شکستہ پا کو مشرودہ، خستگانِ راہ کو مشرودہ
 کہ رہبر کو سراغِ جاوہِ منزل نہیں ملتا
 وہاں کتنوں کو تخت و تاج کا ارماں ہے کیا کہے
 جہاں سائل کو اکثر کاسہ سائل نہیں ملتا
 یہ قتلِ عام اور بے اذن قتلِ عام کیا کہیے
 یہ بسمل کیسے بسمل ہیں جنہیں قاتل نہیں ملتا

۱۹۴۸ء



राजल

नहीं यह फ़िक्र कोई रहबर-ए-कामिल¹ नहीं मिलता
कोई दुनियां में मानूस-ए-मिजाज-ए-दिल नहीं मिलता

कभी साहिल पे रहकर शौक़, तूफ़ानों से टकराएँ
कभी तूफ़ानों में रह कर फ़िक्र है साहिल नहीं मिलता

यह आना कोई आना है कि बस रसमन चले आए
यह मिलना खाक मिलना है कि दिल-ए-दिल नहीं मिलता

शिकसता पा को मुजदा², खस्तगान-ए-राह को मुजदा
कि रहबर को सुराग़-ए-जादा-ए-मंज़िल³ नहीं मिलता

वहाँ कितनो को तख़्त-ओ-ताज का अरमाँ है क्या कहिये
जहाँ साइल को अकसर कासा-ए-साइल नहीं मिलता

यह क़तल-ए-आम और बेइज़्न क़तल-ए-आम क्या कहिये
यह बिसमिल कैसे बिसमिल हैं जिन्हें क़ातिल नहीं मिलता

1948



1. सही रासता दिखाने वाला 2. खुशख़बरी 3. मंज़िल का पता ।

فکر

نہیں ہرچند کسی گمشدہ جنت کی تلاش
 اک نہ اک خلدِ طربناک کا ارباب ہے ضرور
 بزمِ دوشینہ کی حسرت تو نہیں ہے مجھ کو
 میری نظروں میں کوئی اور شہستان ہے ضرور

مٹ کے برباد جہاں ہو گئے سبھی کچھ کھو کے
 بات کیا ہے کہ زیاں کا کوئی احساس نہیں
 کار فرما ہے کوئی تازہ جنونِ تعمیر
 دلِ مضطر ابھی آماجگہ یا کس نہیں

تازہ دم بھی ہوں مگر کچھ یہ تقاضا کیل ہے
 ہاتھ رکھ دے مرے ماتھے پہ کوئی زہرہ جبیں
 ایک آغوشِ حسین شوق کی معراج ہے کیا
 کیا یہی ہے اثرِ نالہ و لہائے حزین

क्रिक

नहीं हर चंद किसी गुमशुदा¹ जन्नत की तलाश
इक न इक खुल्द² तरबनाक का अरमा है जरूर

बज्रम-ए-दोशीना की हसरत तो नहीं है मुझको
मेरी नजरों में कोई और शबिसता है जरूर

मिट के, बरबाद-ए-जहाँ होके सभी कुछ खोके
बात क्या है कि जियाँ³ का कोई एहसास नहीं

कारफरमा है कोई ताजए जुनू-ए-तामीर
दिल-ए-मुजतर⁴ अभी आमाजग-ह-ए-यास नहीं

ताजादम हूँ भी मगर फिर यह तकाजा क्यों है
हाथ रख दे मेरे माथे पे कोई जोहरा जवीं

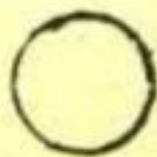
एक आगोश-ए-हसीं शौक की मेराज है क्या
क्या यही है असस-ए-नालआ-ए-दिलहाए हजीं

□

1. खोई हुई 2. पुरबहार जन्नत 3. नुकसान 4. बेचैन दिल ।

غزل

جنونِ شوقِ اب بھی کم نہیں ہے
 مگر وہ آج بھی برہم نہیں ہے
 بہت مشکل ہے دنیا کا سنورنا
 تری زلفوں کا پیچ و خم نہیں ہے
 بہت کچھ اور بھی ہے اس جہاں میں
 یہ دنیا محض غم ہی غم نہیں ہے
 تقاضے کیوں کروں پیہم نہ ساقی
 کسے یاں فکرِ بیش و کم نہیں ہے
 ادھر مشکوک ہے میری صداقت
 ادھر بھی بدگمانی کم نہیں ہے
 میری برباد یوں کا ہمنشینو!
 تمہیں کیا خود مجھے بھی غم نہیں ہے
 ابھی بزمِ طرب سے کیا اٹھوں میں
 ابھی تو آنکھ بھی پر خم نہیں ہے
 محاذِ ایک بادہ کش تو ہے یقیناً
 جو ہم سنتے تھے وہ عالم نہیں ہے



गजल

जुनून-ए-शौक अब भी कम नहीं है
मगर वह आज भी बरहम नहीं है

बहुत मुशकिल है दुनिया का संवरना
तेरी जुलफों का पेचो खम नहीं है

बहुत कुछ और भी है इस जहां में
यह दुनिया महज गम ही गम नहीं है

तक्राजे क्यूं करूं पैहम न साक्री
किसे यां फ़िक्र बेशो कम नहीं है

इधर मशकूक है मेरी सदाक़त
उधर भी बदगुमानी कम नहीं है

मेरी बरबादियों का हम नशीनों¹ !
तुम्हें क्या खुद मुझे भी गम नहीं है !

अभी बज़म-ए-तरब² से क्या उठूं मैं
अभी तो आख भी पुरनम नहीं है

'मजाज़' इक बादा कश तो है यक़ीनन
जो हम सुनते थे वह आलम नहीं है !

□

1950

1. साथ में बैठने वाले 2. खुशी की महफ़िल ।

غزل

جگر اور دل کو بچانا بھی ہے
 نظر آپ ہی سے ملانا بھی ہے
 محبت کا ہر بھید پانا بھی ہے
 مگر اپنا دامن بچانا بھی ہے
 جو دل تیرے غم کا نشانہ بھی ہے
 قتیل جفائے زمانہ بھی ہے
 یہ بجلی چمکتی ہے کیوں دم بدم
 چمن میں کوئی آشیانہ بھی ہے
 خرد کی اطاعت ضروری ہے
 یہی تو جنوں کا زمانہ بھی ہے
 نہ دنیا، نہ عقبیٰ کہاں جائے
 کہیں اہل دل کا ٹھکانا بھی ہے
 مجھے آج ساحل پہ رونے بھی دو
 کہ طوفان میں مسکرا نا بھی ہے
 زمانے سے آگے تو بڑھتے مجاز
 زمانے کو آگے بڑھانا بھی ہے



पञ्चल

जिगर और दिल को बचाना भी है
नज़र आप ही से मिलाना भी है

मुहब्बत का हर भेद पाना भी है
मगर अपना दामन बचाना भी है

जो दिल तेरे गम का निशाना भी है
कुातील-ए-जफ़ा-ए-ज़माना¹ भी है

यह बिजली चमकती है क्यों दमबदम
चमन में कोई आशियाना भी है

खिरद की इताअत² ज़रूरी सही
यही तो जुनूँ का ज़माना भी है

न दुनिया न उक़बा कहाँ जाइए
कहीं अहल-ए-दिल का ठिकाना भी है

मुझे आज साहिल पे रोने भी दो
कि तूफ़ान में मुसकुराना भी है

ज़माने से आगे तो बढ़िये 'मजाज़'
ज़माने को आगे बढ़ाना भी है !



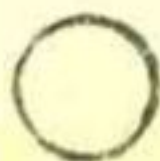
1950

1. दुनिया के सितम का शिकार 2. अक़ल की पैरवी ।

غزل

عاشقی جانفزا بھی ہوتی ہے
 اور صبر آزما بھی ہوتی ہے
 روح ہوتی ہے کیہن پرور بھی
 اور درد آشنا بھی ہوتی ہے
 حسن کو کرنے دے یہ شہزادہ
 عشق سے یہ خطا بھی ہوتی ہے
 بن گئی رسم بارہ خوار بھی
 یہ نماز آبِ قضا بھی ہوتی ہے
 جس کو کہتے ہیں نالہ برہم
 ساز میں وہ صدا بھی ہوتی ہے
 کیا بتاؤں مجھ کی دنیا
 کچھ حقیقت نما بھی ہوتی ہے

۱۹۵۲ء



राजल

आशकी जाँफ़िजा भी होती है
और सब आजमा भी होती है

रुह होती है कैफ़ परवर¹ भी
और दर्द आशना² भी होती है

हुस्न को कर न दे यह शर्मिन्दा
इश्क़ से ये ख़ता भी होती है

बन गई रस्म बादा ख़वारी³ भी
यह नमाज़ अब क़ज़ा भी होती है

जिसको कहते हैं 'नाला-ए-बरहम'⁴
साज़ में वह सदा भी होती है

क्या बताऊँ, 'मजाज़' की दुनिया
कुछ हकीकत नुमा भी होती है !

1952



1. खुशी देने वाली 2. दर्द से भरी हुई 3. शराब पीना 4. तमो
गुस्ते का इजहार ।

زہرا بے حسن

حُسنِ اک کیفیتِ جاودانی ہے
 اور جو چیز ہے وہ فانی ہے
 حُسن کے دن کبھی کیفیت پرور ہیں
 حُسن کی رات کبھی سہانی ہے
 حُسن کی صبح اک شکستِ جمیل
 حُسن کی شام کامرانی ہے
 کچھ افسانہ تخیل نے
 حقیقت کی ترجمانی ہے
 ترے حُسن کا کرشمہ ہے
 مری طبع کی روانی ہے

۱۹۵۲ء



जहराब-ए-हुस्न

हुस्न एक कैफ़-ए-जाविदानी¹ है
और जो चीज़ है वह फ़ानी है

हुस्न के दिन भी कैफ़ परवर हैं
हुस्न की रात भी सुहानी है

हुस्न की सुबह एक शिकस्त-ए-जमील
हुस्न की शाम कामरानी² है

यह कुछ अफ़साना-ए-तख़य्युल है
कुछ हकीकत की तरजुमानी है

कुछ तेरे हुस्न का करिशमा है
कुछ मेरी तबा³ की खानी है !

1952



1. न मिटने वाली खुशी 2. फ़तेह 3. तबीयत ।

غزل

پر تو ساغرِ صہبہ کیا تھا
 رات اک حشر سا برپا کیا تھا
 کیوں جوانی کی مجھے یاد آئی
 میں نے اک خواب سا دیکھا کیا تھا
 حُسن کی آنکھ بھی نمناک ہوئی
 عشق کو آپ نے سمجھا کیا تھا
 عشق نے آنکھ مجھ کالی ورنہ
 حُسن اور حُسن کا پردا کیا تھا
 کیوں مجاز آپ نے ساغرِ توڑا
 آج یہ شہر میں چرچا کیا تھا

۱۹۵۲ء



राजल

परतव-ए-सागर-ए-सहवा क्या था
रात एक हश्र सा बरपा¹ क्या था

क्यूँ जवानी की मृभे याद आई
मैने एक खुवाब सा देखा क्या था

हुस्न की आँख भी नमनाक² हुई
इश्क को आपने समझा क्या था

इश्क ने आँख भुकाली बरना
हुस्न और हुस्न का पर्दा क्या था

क्यूँ 'मजाज' आपने सागर³ तोड़ा
आज यह शहर में चरचा क्या था

1952



1. छाया हुआ 2. गीली 3. प्याला ।

غزل

پیر چہاں بارگہ رتل گراں ہے ساقی
 اک جہنم مرے سینے میں تپاں ہے ساقی
 جس نے بر باد کیا، مائل فریاد کیا
 وہ محبت ابھی اس دل میں جواں ہے ساقی
 ایک دن آدم و حوا ابھی کئے تھے پیدا
 وہ اخوت تری محفل میں کہا ہے ساقی
 ہر چمن دامن گل رنگ ہے خونِ دل سے
 ہر طرف شیون و فریاد و نغاں ہے ساقی
 ماہ و انجم مری اشکوں سے گہرتاب ہوئے
 کہکشاں نور کی ایک جوئے رواں ہے ساقی
 حسن ہی حسن ہے جس سمت بھی اٹھتی ہے نظر
 کتنا پر کیف یہ منظر، یہ سماں ہے ساقی
 مرے ہر لفظ میں بیتاب مرا سوزِ دروں
 میری ہر سالس محبت کا دھواں ہے ساقی



राजल

यह जहाँ बारगह-ए-रतल-ए-गिरां है साक्री
 एक जहन्नुम मेरे सीने में तपां है साक्री

जिसने बरबाद किया, माइल-ए-रयाद किया
 वह मुहब्बत अभी इस दिल में जवां है साक्री

एक दिन आदम-ओ-हव्वा भी किये थे पैदा
 वह अखुब्बत¹ तेरी महफ़िल कहाँ है साक्री

हर चमन दामन-ए-गुल रँग है खून-ए-दिल से
 हर तरफ़ शेवन-ओ-फ़रयाद-ओ-फ़ुगां है साक्री

माह-ओ-अन्जुम मेरी अशको से गुहरताब हुए
 कहकशाँ नूर की एक जू-ए-खाँ² है साक्री

हुस्न ही हुस्न है जिस सिम्त भी उठती है नज़र
 कितन पुर कैफ़ यह मन्ज़र, यह समाँ हैं साक्री

मेरे हर लफ़ज़ में बेताब मेरा सोज़-ए-दहूँ
 मेरी हर साँस मुहब्बत का धुआँ है साक्री !



1. मुहब्बत 2. बहती नहर ।

نقوش

حجاب ناز میں جلوے چھپائے جاتے ہیں
 جہاں میں اہل نظر آزمائے جاتے ہیں
 ابھی بہار بہت دور ہے مگر دل میں
 جنونِ عشق کے آثار پائے جاتے ہیں
 مٹا دیا ہے مجھے عشق نے مجاز مگر
 ستانے والے ابھی تک ستائے جاتے ہیں

کیا ہوا میں نے اگر ہاتھ بڑھانا چاہا
 آپ نے خود بھی تو دامن نہ بچانا چاہا
 یوں تو افسانہ الفت تھا ازل سے رنگیں
 ہم نے کچھ اور بھی رنگین بنانا چاہا

مے گلquam بھی ہے ہمارے عشرت بھی ہے ساقی بھی
 مگر مشکل ہے آشوبِ حقیقت سے گذر جانا

नुक़्श

हिजाब नाज़¹ में जलवे छिपाए जाते हैं
जहाँ में अहल-ए-नज़र आजमाए जाते हैं

अभी बहार बहुत दूर है मगर दिल में
जुनून-ए-इश्क के आसार पाए जाते हैं

मिटा दिया है मुझे इश्क ने 'मजाज़' मगर
सताने वाले अभी तक सताए जाते हैं

क्या हुआ मैंने अगर हाथ बढ़ाना चाहा
आपने खुद भी तो दामन न बचाना चाहा

यूँ तो अफ़साना-ए-उलफ़त था अज़ल से रंगा
हमने कुछ और भी रंगीन बनाना चाहा

मय-ए-गुलफ़ाम² भी है, साज़-ए-इशरत भी है साक़ी भी
मगर मुशकिल है आशू-ए-हक़ीक़त³ से गुज़र जाना



1. पर्दे में रहकर नाज़ो अदा दिखाना 2. लाल शराब 3. हक़ीक़त का इमतेहां।

قطعات

جگر کی خبر ہے نہ دل کی خبر
مگر لڑ رہی ہے نظر سے نظر
یہ سب جن کے ہیں خون سے ہاتھ تر
یہی تھے میسھا، یہی چارہ گر

اک سبکا اور حسین کار ابھی گزری ہے
گنگناتی ہوئی سرشار ابھی گزری ہے
سُن رہا ہوں دل گیتی کے دھڑکنے کی صدا
خالقِ حسن کی شہکار ابھی گزری ہے

اے شاعرِ آشفتمست مئے سہر جوش
کیا کہہ گیا شعروں میں تجھے یہ سبھی نہیں ہوش
اک پیکرِ الطاف و عنایت پہ یہ طعنے
احسان فراموش، ارے احسان فراموش

कृतघात

जिगर की खबर है न दिल की खबर है
मगर लड़ रही है नज़र से नज़र

यह सब जिनके हैं खून से हाथ तर
यही थे मसीहा, यही चारा गर¹



एक मुबुक और हंसींकार अभी गुज़री है
गुनगुनाती हुई सरशार² अभी गुज़री है

सुन रहा हूँ दिल-ए-गेती के धड़कने की सदा
खालिक-ए-हुस्न की शहकार³ अभी गुज़री है



ऐ शायर-ए-आशुफ़ता-ओ-मस्त मय-ए-सरजोश
क्या कह गया शेरों में तुझे यह भी नहीं होश

एक पैकर-ए-अलताफ़-ओ-इनायत⁴ पे ये ताने
एहसास फ़रामोश, अरे एहसान फ़रामोश !



1. इलाज करने वाले 2. खुशी से भरपूर 3. नमूना 4. मेहरबानी और करम ।

یہ مانا آج دل فرطِ الم سے پارا پارا ہے
 بلندی دیکھنے والے کو پستی بھی گوارا ہے
 ہزاروں کے لئے میں گر چکا ہوں بامِ گردوں کو
 ہزاروں وہ ہیں جن کو میں نے گردوں سے اتارا ہے

وقت کی سعی مسلسل کا رگر ہوتی گئی
 زندگی لحظہ بہ لحظہ مختصر ہوتی گئی
 سانس کے پردوں میں بختا ہی رہا سا زجیات
 موت کے قدموں کی آہٹ تیز تر ہوئی گئی

زہد سے اجتناب زور پہ ہے
 ذکرِ جام و شراب زور پہ ہے
 کیا نہ ہو گا محبِ آزاب یوں بھی
 ابھی مرا شباب زور پہ ہے

यह माना आज दिल फ़रत-ए-अलम¹ से पारा-पारा है
बुलन्दी देखने वाले को पसती भी गवारा है

हज़ारों के लिये मैं गिर चुका हूँ वाम-ए-गरदूँ² से
हज़ारों वह हैं जिनको मैं ने गरदूँ से उतारा है



वक्त की सई-ए-मुसलसल³ कारगर होती गई
ज़िन्दगी लहजा ब लहजा मुखतसर होती गई

साँस के परदों में बजता ही रहा साज़-ए-हयात
मौत के क़दमों की आहट तेज़तर होती गई



ज़ोहद⁴ से इजतेनाब⁴ ज़ोर पे है
ज़िक्र जाम-ओ-शराब ज़ोर पे है

क्या न होगा 'मजाज़' अब यूँ भी
अभी मेरा शबाब ज़ोर पे है !



1. रंज की ज्यादाती 2.. आसमान की छत से 3. लगातार कोशिश
4. परहेज़गारी 5. बचना ।

کفر کیا، تثلیث کیا، الحاد کیا، اسلام کیا
 تو ہر صورت کسی زنجیر میں جکڑا ہوا
 توڑ سکتا ہو تو پہلے توڑ دے سب قید و بند
 بیڑیوں کے ساز پر نعماتِ آزادی نہ گا

یہ کوٹ بھی سفید، یہ پتلون بھی سفید
 تیرے سفید ہیٹ کا ہے اُون بھی سفید
 خود جسم بھی سفید ہے اور اسکے ساتھ ساتھ
 میں تو یہ جانتا ہوں ترا خون بھی سفید

اپنا غم اوروں کو دے اوروں کا غم لینے سے کیا
 تیری کشتی پار لگ جائے گی اس کھینے سے کیا
 بات تو جب ہے کہ مر جا عرصہ گاہِ رزم میں
 اس پہ دم دینے سے کیا اور اس پہ دم دینے سے کیا

कुफ्र क्या, तसलीस¹ क्या, इलहाद² क्या, इसलाम क्या
तू बहर सूरत किसी जजीर में जकड़ा हुआ

तोड़ सकता हो तो पहले तोड़ दे सब क़ैद-ओ-बन्द
बेड़ियों के साज पर नगमात-ए-आज़ादी न गा



ये कोट भी सफ़ैद, यह पतलून भी सफ़ैद
तेरे सफ़ैद हैट का है ऊन भी सफ़ैद

खुद जिस्म भी सफ़ैद है और उसके साथ-साथ
में तो यह जानता हूँ तेरा खून भी सफ़ैद



अपना ग़म औरों को दे औरों का ग़म लेने से क्या
तेरी कश्ती पार लग जाएगी इस खेने से क्या

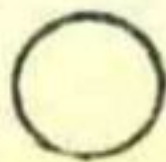
बात तो जब है कि मर जा अरसा गाह-ए-रिज़्म में³
इस पे दम देने से क्या और उसपे दम देने से क्या



1. तीन खुदा मानना 2. कुफ्र, खुदा को न मानना 3. जंग का
मैदान ।

غزل

و صہواں سا اک سمت اٹھ رہا ہے شرارے ارٹاڑ کے آرہے ہیں،
 یہ کیس کی آہیں یہ کیس کے نالے تمام عالم پہ چھا رہے ہیں
 نقاب رُخ سے اٹھا چکے ہیں، کھڑے ہوئے مسکرا رہے ہیں
 میں خیرتی ازل ہوں اب بھی، وہ خاک حیراں بنا رہے ہیں
 ہوائیں بے خود، فضا میں بے خود، یہ غنبر افشاں گھٹائیں بے خود
 مژہ نے چھڑا ہے ساز دل کا وہ زیر لب گنگنا رہے ہیں
 یہ شوق کی واردات پیہم، یہ وعدہ التفات پیہم
 کہاں کہاں آزمیچکے ہیں، کہاں کہاں آزما رہے ہیں
 صراحیاں نو بنو ہیں اب بھی، جما ہیاں نو بنو ہیں اب بھی
 مگر وہ پہلو تھی کی سو گند اور نزدیک آرہے ہیں
 وہ عشق کی وحشتوں کی زد میں، وہ تاج کی رفعتوں کے آگے
 مگر ابھی آزما رہے ہیں، مگر ابھی آزما رہے ہیں
 عطا کیا ہے مجھ سے فطرت نے وہ مذاق لطیف ہم کو
 کہ عالم آب و گل سے ہٹ کر اک اور عالم بنا رہے ہیں



गजल

घुआँ सा इक सिम्त उठ रहा है शरारे उड़-उड़ के आ रहे हैं
 यह किसकी आहें यह किसके नाले तमाम आलम पे
 छा रहे हैं

नकाब रुख से उठा चुके हैं, खड़े हुए मुसकुरा रहे हैं
 मैं हैरती-ए-अज़ल हूँ अब भी, वह खाक हैराँ बना रहे हैं

हवाएँ बे-खुद फिजाएँ बे-खुद, यह अम्बर अफ़शाँ घटाएँ
 बे-खुद

मिज़ह ने छेड़ा है साज़ दिल का, वह ज़ेर-ए-लब गुनगुना रहे हैं

यह शोक्रकी वारदात पैहम, ये वादा-ए-इलतेफ़ात¹-ए-पैहम
 कहाँ-कहाँ आजमा चुके हैं, कहाँ-कहाँ आजमा रहे हैं

सुराहियाँ नौ बनौ हैं अब भी, जमाहियाँ नौ बनौ हैं अब भी
 मगर वह पहलूतिही की सौगंध और नज़दीक आ रहे हैं

वह इश्क की वहशतों की ज़द में, वह ताज की रफ़अतों²
 के आगे

मगर अभी आजमा रहे हैं, मगर अभी आजमा रहे हैं

अता किया है 'मजाज़' फितरत ने वह मजाक़-ए-लतीफ़ हमको
 कि आलम-ए-आब-ओगिल से हटकर एक और आलम बना
 रहे हैं

1929



آہنگِ جنوں

نہ چھڑے ہم نشیں پھر مضرب ہیں بجلیاں دل میں
 مرنے آتے ہی اکڑا آگ لگ جاتی ہے محفل میں
 مرے ہاتھوں میں جب عشق و جنوں کا ساز ہوتا ہے
 زمیں کیا آسماں تک گوش بر آواز ہوتا ہے
 مری آنکھوں میں فرطِ غم سی جب بھی اشک آئے ہیں
 چمن کی ہر کلی نے خون کے آنسو بہائے ہیں
 ہوا کے سر و جھونکے بسکیاں بھرتے نظر آئے
 مہ و انجم مجھے سرگوشیاں کرتے نظر آئے
 سراپا درد ہوں میں دکھ بھری گودوں کا پالا ہوں
 میں ہر محفل کی زینت ہوں میں ہر گھر کا اجالا ہوں
 نہ واعظ ہوں نہ صلح ہوں نہ ہادی ہوں نہ رہبر ہوں
 محبت میرا قرآن ہے جوانی کا پیغمبر ہوں
 ضعیفی محفلِ عشرت میں خرقہ پوش آتی ہے
 جوانی جب بھی آتی ہے کفن بردوش آتی ہے



आहंग-ए-जुनूं

न छेड़ ऐ हमनशीं फिर मुजतरब¹ हैं बिजलियाँ दिल में
मेरे आते ही अकसर आग लग जाती है महफ़िल में

मेरे हाथों में जब इश्क-ओ-जुनूं का साज होता है
जमीं क्या आसमाँ तक गोश बरआवाज़ होता है

मेरी आँखों में फ़रत-ए-ग़म से जब भी अश्क आए हैं
चमन की हर कली ने खून के आँसू बहाए हैं

हवा के सर्द भोंके सिसकियाँ भरते नज़र आए
मह-ओ-अन्जुम मुझे सरगोशियाँ करते नज़र आए

सरापा दर्द हूँ मैं दुख भरी गोदों का पाला हूँ
मैं हर महफ़िल की जीनत हूँ मैं हर घर का उजाला हूँ

न वाइज़ हूँ न नासेह हूँ न हादी हूँ न रहबर हूँ
मुहब्बत मेरा कुरआँ है जवानी का पयमबर² हूँ

जईफ़ी महफ़िल-ए-इशरत में खुरका पोश आती है
जवानी जब भी आती है कफ़न बरदोश³ आती है!

1945



1. बेचैन 2. पैग़ाम लाने वाला 3. कफ़न अपने कान्धों पर लेकर
आना ।

نظم

بغاوت کا علم بردار ہوں محشرِ بدایاں ہوں
 فرشتوں نے جسے سجدے کئے ہیں میں وہ الہا ہوں
 پرانی دشمنی سے اہل زر کے آستانوں سے
 میں بھلی ہوں گرا کر تا ہوں اکثر آسمانوں سے
 میں بادل بن کے صحراؤں پہ منڈلا یا کیا برسوں
 میں بجلی بن کے کاشاتوں پہ لہرایا کیا برسوں
 مرے ہی دم قدم سے بزمِ فطرت میں اجالا ہے
 مجھے آندھی نے لوری دی ہے طوفانوں نے پالا ہے
 جنوں کے راگ گاتا ہوں لہو کے اشک روتا ہوں
 ہمیشہ کشتگانِ غم کی پہلی صف میں ہوتا ہوں
 نظر آنے لگی ہیں پھر مرے خوابوں کی تعبیریں
 مرے پائے جنوں پر لوسی پھرتی ہیں تقدیریں
 مرے سینے میں مستقبل کے جلوے مسکراتے ہیں
 مری گفتار سن کر اہلِ دولت کانپ جاتے ہیں

नज्म

बगावत का अलम बरदार हूँ महश्र बदआमाँ¹ हूँ
फरिशतों ने जिसे सजदे किये हैं मैं वह इन्साँ हूँ

पुरानी दुश्मनी है अहल-ए-ज़र² के आसतानों से
मैं बिजली हूँ गिरा करता हूँ अकसर आसमानों से

मैं बादल बन के सहाराओं पे मँडलाया किया बरसों
मैं बिजली बनके काशानों³ पे लहराया किया बरसों

मेरे ही दम कदम से बज़म-ए-फ़ितरत में उजाला है
मुझे आँधी ने लोरी दी है तूफ़ानों ने पाला है

जुनूँ के राग गाता हूँ लहू के अश्क रोता हूँ
हमेशा कुष्टगान-ए-ग़म⁴ की पहली सफ़ में होता हूँ

नज़र आने लगी हैं फिर मेरे ख़्वाबों की ताबीरें
मेरे पा-ए-जुनूँ पर लोटती फिरती हैं तक़दीरें

मेरे सीने में मुसतक़विल के जलवे मुसकुराते हैं
मेरी गुफ़तार सुनकर अहल-ए-दीलत काँप जाते हैं



1. हंगामा लिये हुए 2. अमीर लोग 3. घर 4. ग़म के मारे हुए ।

بس اس تقصیر پر اپنے مقدر میں ہے مرجانا
 تبسم کو تبسم کیوں، نظر کو کیوں نظر جانا
 خرد والوں سے حسن و عشق کی تنقید کیا ہوگی
 نہ افسوں نگہ سمجھانہ اندازِ نظر جانا
 مے گلِ فام بھی ہے سازِ عشرت بھی ہے ساتی بھی
 مگر مشکل ہے آشوبِ حقیقت سے گزر جانا
 غمِ دوراں میں گزری جس قدر گزری جہاں گزری
 اور اس پر لطف یہ ہے زندگی کو مختصر جانا

۱۹۴۵ء



बस इस तकसीर¹ पर अपने मुक़द्दर में है मर जाना
 तबस्सुम को तबस्सुम क्यूँ, नज़र को क्यूँ नज़र जाना
 ख़िरद वालों से हुसन-ओ-इश्क़ की तनक़ीद² क्या होगी
 न अफ़सून-ए-निगह³ समझा न अन्दाज़-ए नज़र जाना
 मय-ए-गुलफ़ाम भी है साज़-ए-इशरत भी है साक़ी भी
 मगर मुशक़िल है आशोब⁴-ए-हक़ीक़त से गुज़र जाना
 शम-ए-दौरा में गुज़री जिस क़दर गुज़री जहाँ गुज़री
 और इस पर लुत्फ़ यह है ज़िन्दगी को मुख़तसर जाना

1945



-
1. ग़लती 2. अन्ध्राई बुराई निकालना 3. नज़र का जादू
 4. हक़ीक़त की मन्ज़िल ।

غزل

دلِ خوں گشتہ جفا پہ کہیں
 اب کرم سبھی گراں نہ ہو جائے
 تیرے بیمار کا خدا حافظ
 نذرِ چارہ گراں نہ ہو جائے
 عشق کیا کیا نہ آفتیں ڈھائے
 حسن گر مہربان نہ ہو جائے
 مے کے آگے غموں کا کوہِ گراں
 اک پل میں دُھواں نہ ہو جائے
 سچر مجاز ان دنوں یہ خطرہ ہے
 دلِ ہلاکِ بتاں نہ ہو جائے

۱۹۵۱ء



ग़ज़ल

दिल-ए-खूं गशता-ए-ज़फ़ा¹ पे कहीं
अब करम भी गराँ न हो जाए

तेरे बीमार का खुदा हाफ़िज़
नज़र-ए-चाराह गराँ² न हो जाए

इश्क़ क्या क्या न आफ़तेँ ढाए
हुस्न गर मेहरबाँ न हो जाए

मय के आगे ग़मों का कोह-ए-गराँ
एक पल में धुआँ न हो जाए

फिर 'मजाज़' इन दिनों यह खतरा है
दिल हलाक-ए-बुर्ता³ न हो जाए !

1951



1. मुसीबत का मारा दिल 2. इलाज करना 3. महबूब ।

غزل

درد کی دولت بیدار عطا ہو ساقی
 ہم بھی خواہ سمجھی کے ہیں بھلا ہو ساقی
 سخت جاں ہی نہیں ہم خود سر و خود دار کجی ہیں
 ناوکِ نازِ خطا ہے تو خطا ہو ساقی
 سعیِ تدبیر میں مضمحل ہے اک آہِ جاں سوز
 اس کا انعام سزا ہو کہ جزا ہو ساقی
 سینہ شوق میں وہ زخم کہ نو دے اٹھے
 اور بھی تیز زمانے کی ہوا ہو ساقی
 آہدِ صباں لکھی ہیں سنسان ہے میخانہ شوق
 اب تو اک سجدہ معصوم روا ہو ساقی
 ۱۹۵۴ء



पञ्चल

दरद की दौलत-ए-बेदार अता हो सकी
हम बहीरुवाह¹ सभी के हैं भला हो सकी

सस्त जाँ ही नहीं हम खुद सर-ओ-खुद्दार भी हैं
नावक-ए-नाज खता है तो खता हो सकी

सई²-ए-तदबीर में मुज्जमिर³ है एक आह-ए-जाँ सोज
इसका इनआम सजा हो कि जजा हो सकी

सीना-ए-शौक में वह जल्म के ली दे उठे
और भी तेज जमाने की हवा हो सकी

आधिर्या उठी हैं सुनसान है मयखाना-ए-शौक
अब तो इक सजदा-ए-मासूम रवा हो सकी

1954



1. भलाई चाहने वाला 2. कोशिश 3. छिपा हुआ ।

غزل

یہ تیر گئی شب ہی کچھ صبح طراز آتی
 خود وعدہ فردا کی چھانی بھی دھڑک جاتی
 ہونٹوں پہ ہنسی مہم آتے ہوئے شرماتی
 اب رات نہیں لگتی، اب نیند نہیں آتی
 جو اول و آخر تھا وہ اول و آخر سے
 میں نالہ بجاں اٹھتا وہ نغمہ لب ساز آتی
 سوزِ شب، بھراں پھر سوزِ شب بھراں ہے
 شبنم بہ مژہ اٹھتی یا زلفِ دراز آتی
 یارب وہ جوانی بھی کیا محشر ارماں تھی
 انگڑائی بھی جب لیتی ایک آنکھ جھپک جاتی
 آغازِ سیہ مستی، انجامِ سیہ مستی
 آئینہ میں صورت بھی آنے کی قسم کھاتی
 سینے میں مجاز اب تک وہ جذبہ کافر تھا
 تثلیث کی جو نندہ وحدت کی قسم کھاتی



राजल

यह तीरगी-ए शब ही कुछ सुबह तराज आती
खुद बादा-ए-फ़रदा¹ की छाती भी धड़क जाती

होंठों पे हँसी पीहम आते हुए शर्मती
अब रात नहीं कटती, अब नींद नहीं आती

जो अब्बल-ओ-आखिर था वह अब्बल-ओ-आखिर है
मैं नाला बजा उठता वह नगमा बसाज आती

सोज़-ए-शब-ए-हिजरा² फिर सोज़-ए-शब-ए-हिजरा है
शबनम पे मिज़ह उठती या जुल्फ़ दराज आती

या रब वह जवानी भी क्या महश्र-ए-अरमा थी
अँगड़ाई भी जब लेती एक आँख भपक जाती

आगाज़-ए-सियाह मसती, अन्जाम-ए-सियाह मसती
आईने में सूरत भी आने की क़सम खाती

सीने में 'मजाज़' अब तक वह जज़बा-ए-काफ़िर था
तसलीस की जोयनदा वहदत³ की क़सम खाती !

1954



1. पुराना बायदा 2. जुदाई की रात 3. खुदा को एक मानना ।

غزل

نہ رہ نما نہ کسی رہ گذر کو دیکھتے ہیں
 جدھر سے تیر چلے ہیں ادھر کو دیکھتے ہیں
 جبینِ گرم بہ تمکینِ نازِ کیا کہتے
 بھی فریبِ قضا و قدر کو دیکھتے ہیں
 نگاہِ آرٹ نہ لے معصیتِ پناہی کی
 ابھی تو وسوسہ و اماںِ تر کو دیکھتے ہیں
 سوادِ نجد کی رعنائیوں میں گم یکسر
 کسی سفیر کے عزمِ سفر کو دیکھتے ہیں
 ۱۹۵۲ء



राजल

न रहनुमा न किसी रहगुजर¹ को देखते हैं
जिघर से तीर चले हैं उघर को देखते हैं

जबीन-ए-गर्म ब तमकीन-ए नाज क्या कहिये
अभी फेरब-ए-कजा-ओ-कदर को देखते हैं

निगाह आड़ न ले मासियत पनार्ह² की
अभी तो वुसअत-ए-दामान-ए-तर को देखते हैं

सवाद-ए-नज्द की रानाइयों में गुम यकसर
किसी सफ़ीर के अज-ए-सफ़र³ को देखते हैं

1954



1. रासता चलनेवाला 2. गुनाहों से पनाह माँगना 3. सफ़र का इरादा ।

غزل

رعشہ سا جو یاں دست و گریبان میں دیکھا
 ہندو میں نہ پایا نہ مسلمان میں دیکھا
 سفاک سے ابرویہ غضبناک سی آنکھیں
 اک داغ سا بر قلب پر ارمان میں دیکھا
 فرخندہ جبیں ہو کے بھی شمشیر بکفت ہے
 شیطان نے کیا سینہ انسان میں دیکھا
 اب درو کلیجے سے لگائے ہوئے پھرے
 ایمان سے پایا ہے نہ ایمان میں دیکھا
 اس سے تو مجھ سے آپ بھی بے بہرہ ہوا شاید
 جو سوزِ وفا آپ کے ہذیان میں دیکھا
 ۱۹۵۲ء



ग़ज़ल

राशा-जो यँ दस्त-ओ-गरीबान में देखा
हिन्दू में न पाया न मुसलमान में देखा

सफ़ाक से अबरू थे ग़ज़बनाक-सी आँखें
एक दाग़-सा हर क़ल्ब-ए-पुर अरमान में देखा

फ़रख़न्दा¹ ज़बीं होके भी शमशीर बक़्र है
शैतान ने क्या सीना-ए-इन्सान में देखा

अब दर्द कलेजे से लगाए हुए फिरये
ईमान से पाया है न ईमान में देखा

इससे तो 'मजाज़' आप भी बे बहरा हों शायद
जो सोज़-ए-वफ़ा² आपके हिज़यान में देखा

1954



1. हँसती हुई 2. तलवार हाथ में लिये ।

گیت

کیسی تباہی آئی
 جی بیٹھ گیا من ہارا اب سوتا ہے جگ سارا
 ہرپگ پر دکھ کے کٹنے ہر راہ میں گھور اندھیرا
 ہر سمت اُداسی چھائی
 کیسی تباہی آئی
 اک جوت جگا کرنل میں وہ چاند چھیا بادل میں
 اب کوئی نہیں ہے اپنا اس جیون کے جنگل میں
 ہر سانس ہے اک دیہائی
 کیسی تباہی آئی
 سینوں کے محل سب طے آشنا کے ویسے بچھائے
 بیتا کی آمدھی اُسھی دکھ درد کے بادل چھائے
 آفت کی گھٹا منڈ لائی
 کیسی تباہی آئی



गीत

कैसी तबाही आई

जी बैठ गया मनहारा
 अब सूना है जग सारा
 हर पग पर दुःख के कटि
 हर राह में घोर अन्धेरा

हर सिम्त उदासी छाई
 कैसी तबाई आई
 एक जोत जगाकर पल में
 वह चाँद छुपा बादल में

अब कोई नहीं है अपना
 इस जीवन के जंगल में
 हर साँस है एक दुहाई
 कैसी तबाही आई

सपनों के महल सब ढाए
 आशाना के दीप बुझाए
 विपता की आँधी उठी
 दुःख दर्द के बादल छाए

आफ़त की घटा मँडलाई
 कैसी तबाही आई

اُردو کے مقبول شاعروں

کی چنیدہ شاعری اب
 اُردو اور ہندی رسم الخط میں ایک ساتھ!
 سٹارپاکٹ سیریز کے زیر اہتمام ایک نیا سلسلہ شروع
 کیا جا رہا ہے۔ جس میں
 آپ کے پسندیدہ اُردو شاعروں کے کلام کا انتخاب
 اُردو۔ ہندی دونوں زبانوں میں آمنے سامنے
 پیش کیا جا رہا ہے۔ اس سلسلے کی پہلی پانچ کتابیں اسی
 ماہ پیش کی جا رہی ہیں۔
 اگر قارئین کرام کو یہ کتابیں پسند آئیں۔
 تو ہماری یہ کوشش ہوگی
 کہ اُردو کے سبھی مقبول اور پسندیدہ شاعروں کا منتخب
 کلام اس سلسلے کے تحت پیش کیا جائے۔
 قارئین سے گزارش ہے کہ ان کتابوں کے بارے میں
 اپنی گراں قدر رائے سے ضرور نوازیں۔